



പ്രൈം ടൈം  
പ്രൈം ടൈം  
പ്രൈം ടൈം  
പ്രൈം ടൈം



# हम मोहरे दिन रात के

सुनीता

सुरुचि प्रकाशन, नई दिल्ली

© सुनीता

मूल्य पाच रुपए  
प्रथम संस्करण अगस्त १९७१  
आवरण मुशील वत्त

राकेश जैन को



## क्रम

विरधा जनम हमारो	१
पावती जन रोएगी	११
कमाई	२३
एक और नील की नागिन	१
परदेस	४१
शुनिया का पिल्ला	५७
एक नगर रपटीला	६५
कायला भई न राख	७५
सरमी घरती	८७
एक दह एक प्राण	१०३
हम माहर दिन रात के	११३





बिरथा जनम हमारो



साथ घाले वकील साहब की आज शादी है। मेरा अभी विवाह नहीं हुआ और शादी-ब्याह के मामले में बहुत सेन्सिटिव हूँ।

वकील साहब का बगना हमारे बगले से हम तरह सटा हुआ है कि प्रपन बगीचे में बठी में दीवार के टूटे हिस्से में से बहुत कुछ देख सकता हूँ। बहुत साल हुए, बरसात में बीच की यह दीवार गिर गई थी, फिर उठाई नहीं गई। हम लगातार म स्नेह इतना है कि आन-जान का माग सहल हो जान से हम सब प्रसन्न ही हैं।

दखता हूँ कि पूरा आयोजन हो चुका है। वागत का समय हा चला है। ताल बजरी के प्रवल पर दा मशकची पानो छिडक रह हैं और नात रिमापरा की खासी भीड़ हा गइ है। जा में आता है वकील साहब से लड पडें। शाप्ती में तो मैं जाने की नहीं। [माँ बिगडे, चाहे जो हो। भया कोई बात है कि वकीलनी आण्टी के मरत ही, दा महीने में वकील साहब दूसरा पाह रचा लें।

जमा अनुमान था माँ मुझे बगीचे में बठी देव प्रमन्न नहीं हुई। आवर धोली 'घरे, शादी में चलना है कि नहीं। बंड बाल आ गए। घोड़ी तयार है, और तू बिताव ही लिए बठा है। कमी लडकी है ?

मुझे नहीं जाना है माँ। तुम जाती हो तो जाओ।

'आखिर कोई बात भी ता होगा न जाने का ? पचास का मामला है व नाग क्या कहेंगे ? हमेंगा की नाराजगी हो जाएगी।'

'तुम कह देना तबीयत ठीक नहीं है।'

‘पर तू चलती क्या नहीं ? राय तो जा रह है । फिर मैं जाना भी नहीं बनाया है । भूसा रटगी क्या ?’

मुझे तो आज भूल ही नहीं है । तुम भी कमी हो माँ ? कबीलना घाण्टी से तो इतना प्यार था तुम्हें और उनके मरने पर बकाल साहब के दूमरे ब्याह म जा रहा ही ।

बटा भाग्य पर क्या बस किसी का । कमला तो मुझे मगा बहन स भी उपादा था कहते हुए माँ बराबर की बुरी पर बड गर् ।

‘लेकिन कबील साहब स ता एमी उम्मा नहीं था मुझे कि इतना जल्दी दूतरा ब्याह रना लेंगे ।’

‘उस बेचारे को क्यों दाय देनी हो ? उसका क्या मुल हाना हागा । देला नहीं बा मारी मे कितना सेवा की था कमला का । ब्याह तो बच्चा की खातिर कर रहा है न कि अपन लिए ।

यह तो सब बहाना है माँ । कभी सीनली माँ से सुल होता है बच्चा का । इतना पता है आया क्या नहीं रल लेते ?

‘कसी बातें बरती है । माँ माँ ही रहगा नौकर नौकर । और सीनला हान से ही क्या वह प्यार नहीं करगी । सब एक म नहा हात । तू तो गुस्से म है । अब बता कबील बेचारा घर को दम कि काम पर जाए ? ब्याह हो जाएगा तो घर की चिन्ता स मुक्त रहगा । अगर बुरी भी आ जाती है ता बच्चा का भाग्य । इतन हा भाग्यवान हात तो अपनी मा क्या मरती बेचारीकी । जब मेरा ब्याह हुआ था ता ब्याहलो की गाद म तर बड भैया को बिठा दिया था, तरी णदो न । बेचारा डेड बप का था बुन । और पूछ ले जो एक दिन भा उस ट स निमा हो । जल्ट तुम सबसे ज्यादा मुझे उसी की मुहब्बत है ।

माँ से मैं जिरह म सदा हारी हूँ । माँ चली है और बारात भी चल पडा है । एक मैं हा अभी भी लान म बठी हूँ । लाउडस्पीकर क गाना क मारे सिर फटा जा रहा है । सुना है, दिल्ली म तो अब शानी

मे लाउडस्पीकर लगने बाद ही गए हैं। पर अपना मेरठ अभी इतना 'माडन' नहीं हुआ। सो 'भैं भैं' की आवाज करते घिसे पिटे गाने बज ही रहे हैं। पता नहीं, दूसरो का चन छीन लेने वाला पर म्युनिस्पलिटी टकम क्या नहीं लगानी।

नई बकीलनी आज दोपहर ही आ गई। नवजात शिशु और बधू दा चीजें देखने का लोभ में कभी सवरण नहीं कर सकती। अपनी नाराजगी को ताक पर रख कर भी बहू देखने गई। अधिकतर नई बहू का घेम्घार कर सारा कुनवा बठा रहता है। पर बकीलनी एक तरफ लाल धोती में सिक्की-सी बठी थी। माथे पर नाक तक का घूँघट था। मैं उठाकर देखा और देखता ही रह गई। कठिनता से सत्रह अठारह बरस की होगी। रो रोकर आँखें सूजी थी और चेहरा बड़ा स्वस्थ भरा भरा था। वह सिर झुकाए बठी ही रही। देखा कि घर में बहू के प्रति विशेष कौतूहल नहीं है। थोड़ी चुहल है। एक ता बचारा दूसरा थी तिसपर गरीब गाँव घर की। दहज के नाम पर कुछ एक सूता घातियाँ बगरह ही लाई थीं। वहा भी किसी को कुछ आशा नहीं थी। सा सब खाने पीने में मग्न थी। थोड़ा-बहुत कौतूहल यन्त्रि किसी का था तो बच्चा का—बकील साहब के छ बच्चा का। बारी बारी से आकर व अपनी नई मा का देखते और चने जात। उन देखन में आशा से अधिक भय था जो 'मौतली' शब्द से उपजा हागा।

मैं जितने गुस्से में गई थी बकीलनी को देखकर उससे कहा अग्रिक आशोश में भरी लौटी। आन हूँ मैं से उलभ पटा। 'देख लिया न मा बकील साहब को। तुम तो कहता था बड़े बेचार हैं। क्या हक था उन्हें एमी बहू लाने का ?'

“क्या, क्या हुआ ?”

‘हुआ क्या आप तो बत्र में पर लटकाए बटे हैं और बहू लाए हैं मानह बरस की। मुझ में भी छोटा ।’

‘शम कर। क्या अनुभ वालता है ? चालीस का ही तो है ।’

'तुम्हें न मरना का हुआ कि नहीं?' तबतक तो बच्चे भा उसे पानन हा। वह तो मर बच्चा-गा है। मरना का मैं नहीं, बहुत जबा है। मुझे तो एसा प्रेम था रहा है कि क्या बनाऊँ मर कहा मैं विधर न मरना जान म मरना नहीं मरना ?

मैं काय बागा नहा। जब धीमे का पानन घाटे म गिरने म मरने का मरना एसा उगाया तो मैं था। हा 'मरना मैं न एसा बाग का जाती है। हाथ बचाना मैं वही म उठ गई।

बकील साहब धीरे हमारे पर क बाप एक ट्रांसमाटर मरना हुआ है त्रिगम दाना घरा का मिनट मिनट की स्थिति मरिग काम-ट्रा का तरफ हम मिलना रहना है। उदा ममभ घाय। वह हमारी मरना है न जुगना घरा हमारा जाता-जागता ट्रांसमाटर है। तबम पटना मरने धार् विमोट 'न' बह एक दम घाटे घरान की निरन्तर घाघार-विचारा का। बहया इतना कि मरना क मरना तिन ही घू घू की निरन्तरि द पत्मा पाठ म रास मरनी बना घूम रहा है धीरे एक-एक कर महीना स ठहरा बाधा, घुसा मोगिया का बिदा दे रहा है। सुनकर घाघरय हुआ। घाघरय न पा का काम किया। जुगनी भमबा

धीरे विटिया हैरत क्या। उसे क्या पता बह पर का मर-बटिया का सहर कायदा। गाँव म घाघा पला दा जून का ला लिया। मा यहाँ भा मरना करन लगा। दस लना दा दिन म ही मिस्तर (रसाइय) का भी छुट्टी दे दगी। अब गए पहली बकीलना क तिन। अब बच्चा का भगवान ही मानिक है।

मुझे भा चिन्ता बच्चे की ही था। सातकर सबसे छोटा पिन्टु म तो मैंने अपनी जान बसा छोड़ी थी। अगर बकीलनी ने उस मारा तो मैं क्या कर सकूँगा। वह तो माँ है उसकी। बल ध न दूसरा मरना करन अब लें मजे।

दापहर की फिर कामेण्ट्री हुई। बकील साहब तो सिटपिटाए से कोट चल गए है। रिश्तदार भा सब जा रहे है धीरे 'मल्ला रानी

सारा घर साफ करवाने में लगी है।

शाम को बिना उधर से निकला। मैंने पकड़ कर पूछा, "अर बिन्नु, माँ कसी है ?

पता नहीं।' वह भाग गया। मैं असमजस में ही रह गई।

जरा दिन बड़े साकर मैं उठती हूँ। अगले दिन उठ घर की दरार में भाँका तो धक्का सा लगा। बकील साहब के महाँ बड़ी शान्ति थी। बच्चों का बोलाहल सुनाई नहीं देता था। राज ता लान में लडत-भगडत खेतन रहत थ सर।

दसक बजे फिर उधर निगाह गई। देखा पाँचों लडके नहाए धोए बरामने में बतार बाँध वस्ता पट्टी लिए बठ हैं और गिरधर शास्त्री स्टूल पर बठे उनका काम जाँच रहे हैं। बच्चे कोई विशेष प्रसन्न नजर नहीं आते, गमियों का छुट्टियों में विदयारम्भ देखकर कुछ साचूँ कि इसके पहले ही 'खबरें' आन लगी।

जुगनी ने आकर बताया, जो कहा था वही हुआ न आखिर। मिस्तर की छुट्टा। चौका चक्की खुद सभास बठी है। और मिस्तर क बन्ले शास्त्री जा बुलाए गए हैं। बच्चे बकार भ्रमट में फसा दिए गए हैं अभा से। बचारे।'।

दोपहर काई दा बजे राजश माँ से सिलाई की मशीन माँगन आया। माँ ने आश्चर्य से पूछा, 'कयो रे, क्या करेगा मशीन का ?'

"वह, वह जा माँ है न। उन्हनि मगाइ है ताई। मुनी की और गुन्डू की बनियान-जाँघिया सीएँगी।'।

'इतनी धूप में? बला की ता गर्मी है। भला यह क्या टाइम है कपडे सीने का? सुबह से क्या कर रही थी?'

'सुबह तो खाना बना रही थी। मिस्तर जी तो चले गए न।'

'अरे हाँ, मैं तो भूल गई थी। रज्जो बेटा भला यह मिस्तर का कयो निकाला उसन? कब से तो था पडा रहता।'

'पता नहीं, ताई।'



८ ७ हम मोहरे दिन रात के

राजेश मशीन ले गया। माँ बडबडाई 'मुझे तो रग ढग ठीक नजर नहीं आते। ऐसा तो न कभी देखा न सुना। जब देवो काम म ही लगी रहती है यह लडकी।

उसके कोई दो दिन बाद पिण्डु मरी गोद म बठी थी। मै कोई पत्रिका देय रही थी। माँ ने पूछा ए पिण्टी तेरी माँ क्या कर रही है ?

पूजा कर रही है भगवान की। ताई माँ ने बडा अच्छा मन्दिर बनाया है। वृष्ण भगवान रखे हैं। रोज पूजा करती है। वह रात म भी वही सोती है। बल से तो मैं भी वही सोऊगी। मन्दिर म सोने से रात को डर नहीं लगता।

माँ कुछ देर चुप बठी रही और फिर एकाएक चप्पन पटनकर बकील माहव का धार बन दी। माँ तो अकसर वहाँ जाती ही रहती थी। मैं पत्रिका पढ़ती रही और वोर होकर पिण्डु मरी गोद म ही गो गइ। मैं उन कप से लगाकर उसके पर म बना। पिण्डु को धारगार्फ पर लटा कर मुझे कुछ देर उस घपकना भी पशा क्याकि वट जाग गई थी और मरा माँपन छोड़नी ही नपा थी।

कुछ ही क्षण बाद हाये नि दागण के गनाटे म बराबर क कसर का गना गिना म माँकी धारात्र धार उर धारना कद्रगमान गया कर गमां वना है बामार पठ जाएगा।

नया धम्मा मै ना राक है। यर धम्मा रग पय म हा लई गता ? माँ पना नपा कस मयग गिना जाइ पना है।

टाक कर्ना ? मर ना राक नपा मगता। मिग्गर का कना निराप गिया। लमी म गन गता गता है।

धम्मा क्या क रग ? गाना और कान् बनान पर मा धम्मा नपा न। तापा व ? मै हा कना कन गा। माग्गर न ना गा धार मय है ।

ध ना खून मा नपा मर माग्गर कना मग गिया ?

क्या बच्चे । घर की मफाई करायी तो एक का भी तस्ती उस्ता सावुन नहीं मिना । लगना है, महीना से इन सबन कुछ पडा ही नहीं । अभी बचाई निकल जाएगी ता अच्छा है ।”

वह यह मन्दिर कब बना लिया तूने ? और यह अपनी क्या हालत बना रखी है । न तन पर ढग का कपडा न बाली, न भुमका ।

‘यह ता जीवन के साथ है अम्मा मिंगार करके क्या करना है ?’

‘और तू सानी भी यही है ?’ माँ न होन से पूछा । मानो कठिनता से इतनी देर रह सकी थी ।

।”

‘बकील साहब कहां सोने हैं ?’

‘अपने कमरे म ।’

बठक मे ?”

‘जी ।

‘यह क्या बात हुई ? तू बच्चो को लेकर अलग पडी रहता है । और तरे ब्याह को दिन ही कितने हुए हैं । लडाई हो गई क्या ? अभी नहीं खाए पहनगी तो फिर कब ? ऋगडा हो गया हो तो मुझे बता ?’

।

देख, कोई बात हा ता मुझे बता । तेरी मा के बराबर हूँ तर से पत्ने जो थी वह भी बटुन मानता थी । बचपने म आकर कुछ न कर बटना ।”

उधर मे घारे धीरे मिसकने का स्वर आने लगा । पिण्डु को यपकता मेरा हाथ एक बारणा यम गया । अरे ! माँ उम सहला कर सात्वता मे कुछ कह रहा थी । क्या बात हुई समझ नहीं आई । फिर मिमकिया म नई बहू की आवाज उभरी ‘ब्याह की रात कहन नग मरे बच्चा का खयाल रखियो । यही तेर भी बच्चे हैं । ईश्वर के दिए पहले से हा छ हैं । इसलिए इनजाम कर आया हूँ । परमा ही आपरेशन करवा लिया है अपना ।’

१० ॐ हम मोहर तिन रात क

‘क्या ? वकाल साहब न आपरशन करवा लिया ? शास्त्र स पहल ही ?

हाँ, माँ जी । लकिन एक बात का उनका एहसान है कि पहल ही बता लिया । नही ता गल-गल कर में मरती । अब तो पत बच गई । यह शरीर भगवान को सौप दिया है । उह चढा दिया है । नहा ता यह देह कलकित हो जाती झूठा हो जाती माँ ।

कसी बात कहती है यह ?

ठीक कहती हूँ माँ जी । ज्याला पढा लिखी में नहा हूँ । शास्त्र क्युद पढ हूँ । उनम लिखा है स्त्री और पुरुष म शरीर का कम सन्तान की इच्छा स ही होना चाहिए । अथवा वह दुष्कम हागा व्यभिचार होगा । जब सन्तान होनी हा नही फिर यह कम कसा ? नहा माँ वह तो अधम ह धार पाप । मैंन उह कह लिया है कि जितनी भ्र तुम्हारी सवा करुगी तुम्हार बच्चो का भा माँ का तरह पातूगा पर शरार मरा मन छूना कभा भी । वह ता म अधण कर चुका है कपण महाराज को ।

हमक वात एक हृदय विदारक सिमका सुनाई दा । फिर आवाज घाई बडा बटा मा घका सा जा घावाज स अधिक् आह था ।

उन मरा जाजा का छ लात रहान तिम माँ—एक मरु भ न दन ता जावन सपन न हा जाता । विरधा ता न जाना ।

उम रनाई का सुनन का शक्ति मुझ म नहा था । म वमी-का वमा बना बटा रह गई समभ न पाई भाग जाऊँ या मनवा रहूँ ।

पार्वती जब रोएगी



मिगरट का पकेट जेब से निकालत हुए उसका उगलिया अगूठा की डिब्बिया स टकरा गई और जब म ही ठिठक गई। सानिया का कार घाई घोर मुड कर ओभल हो चुकी था। शाम क घिरते अघकार म शिकागो की भीमकाय धु धना कलसाई इमारता क साया मे दबा वह एकाएक धका-सा हा आया, पोर-मार म थकावट एम रिस घाई कि बडा रहना दूभर हा गया। पर घसीटता वह "इटर-नशनल हाउम' की सीढियां चढ़ने लगा, "हैला", किसा न कहा।

हैला ' विना दबे हा उसन जवाब दिया।

सान की सादा अगूठी। अभी ता सोनिया पसंद कर गई थी। परसा वह उसे पहन लगी, परसा वह उस पहना दगा।

शर्मा सामने से आ रहा था वह कतरा कर अपन कमर की तरफ बढ़ गया।

साला उसक मुह म एक शब्द उभरा। उसे दखन हा शर्मा का आखा म जो एक धिनौना वासना भरा प्रश्न उभर आता है उस वह सहन नहीं कर पाता और कुछ कह भा तो नहीं पाता। शर्मा की मिचमिचा आँखा और युवावस्था के मुहासो के दागो से भरे चेहर पर वह प्रश्न लपनपाता रहता है।

पहन वह मिलत हा कंधे पर हाथ मार कर पूछता था "है न गौरा कमला कमल की बीज ? दोस्त तू बडा किस्मत वाला है आन ही बटिया माल हाथ लगा है। यहाँ चार साल म सब चिसी पिटी ।



मा, पिता जी, कम्मा, विम्मा और मनो स्वयं वह और पावती ।

‘कम्मा जरा उसे भेजना ता,’ कमरे में जाने की थाली लेकर अर्ध कम्मा से उसने कहा था ।

‘वह भाभी तो ” मावली कम्मा लान पड़े हाठ बाटनी नाच उतर गई थी ।

हाथ का हैंगर पलंग पर फक्ते वह बेहद भु भन्ना गया था । वह अलग है कम्मा का आधा वाक्य बेन्गा मुह बना उसने पूरा कर दिया था ।

नाचें बिसी काने में टाट पर गठरी बनी पड़ी हांगी । अखबार पर रख खाना चाएगी और मिट्टी के बतन में पानी पीएगी । जाहिल । उसने दाँत पीसे थे, जान पावती पर घर पर माँ की छुआछूत पर या कि मारे घमपुरे पर, सारी लिली सारे समाज पर ।

घमपुर में उसे नफरत था सकून नफरत । गली में पर रखने ही नाक पर रुमान रख वह मिकुडा मिकुडा गदगी और खिडकियो में पक गए बूटे मवचना, आवाज़ गाय भैंसा संवतराता चलता था । यही वह पत्ता हुआ था यहाँ खेला था, पर हर दिन के साथ उसकी घणा यहाँ के लिए बन्ती ही जानी थी ।

छत पर बटा वह माटी माटी कितारें लम्प के प्रकाश में पत्ता, माँ की बराहट और पिता ना की दमा खामी का मुना करता । जाल के नाचे रमो घर से आती-जाती तीना वहना के युवा शरार और पाने चहर उस जहर से गगने थे ।

कभा साथे मुह वह उनसे बालता नहीं था । बचारी सहमी रहती था उसमें । वह चाहता था कि ब पत्ते बुद्ध करें घर में खाली न पड़ी रह । मनको टी० बी० हो जाएगी । टी० बी० उसका मन चिल्लाता । पर कहा जाए वह ?

गना में आवाज़ गुण्डे हर पनवाडा के यहाँ जमघट लगाए रहते हैं । उनके छत्र की आर मुह कर मीटियाँ बजान हैं, पान में रंग होठो



१६ ० हम मोटर तिन रात के

पर जाभ परत है। किस किस स लड वह। लडने सायक हो भा ता।  
नाली के गद काड और मज पर मक्का द मारता।

सब ही ताना का टा० बी० हा जाएगा और एम० एस-सा० म  
पन्न वाल उसन उस माट मारवाडा की चार पुट्ट घाठ इच का अन-  
पठ दुगली लडकी स बिना घू-चरा किए याह की हां भर दा था।  
मना और विम्मा दोनो का ब्याह एक सप्ताह भाग-बीछ हो गया था  
एक का सक्ड दूमरी का रिवाडी।

मां सुग नहीं थी। गाव म लडकिया जाए और वह भी दहातिया  
क यहाँ। शहर म क्या बाबू लडक नहीं थ? थतो किन्तु य भा सब  
गली गली कूचा सट माली बाडे म रहत थ। जहाँ बबूतर और  
इन्सान वल्लू और धुआं साय-साय पनपते है जहाँ पाखाना का मज  
कठपुनले सिर पर लात है जहाँ टी० बी० के कीटाणु सासा म जात है।  
नहीं मन्ना और विम्मा साफ हवा म रहगा गन्दगा भरे इस वातावरण  
स दूर।

करवट वल्लत उसे लगा पावती वहाँ कमरे म धरता पर लाल  
दुशान म लिपटी पडी है। पसीन स और घू घट स फला बिन्दा रान  
से सूनी आँखें पपडाए होठ मट्ठी की बासा गध भरा हथेली जिसमे  
सक्डो पतली आडी तिरछी लाइन खिची थी और सुबकिया म उठता-  
गिरता पावती का वक्ष।

पावता! अरे उमा ही हो जाता नाम। कॉलेज म साथ पढता  
था बिभा रचना अचना सध्या निशा घर म पावती। पारो भा  
ता कस कह? विमल राय प्रोडक्शनस का पारो—कहाँ वह सुचित्रा  
सन और कहाँ यह? नहीं पावता पावता हा थी। फिर नाम तना ही  
कब होता था। वह बोलती जो नहीं थी। हा हूँ जा किया  
करता थी। गुरु म तो वह भा नहीं। हाथ लगाया ता रा पडा। बडी  
प्राज होता था उस कभी-कभी।  
पन्न तिन शाटा क छ राज बाद जब उस उसन अपन कमर म

बठ पाया था ता थाडा अचकचाया था । यह नहा कि वह विवाह म उस विदा करा लाकर भूल गया था । मिए उसे विशेष उमकता नहा था । इस घर म मा क नियम-बधन थ । बधू उमका हूई तो क्या जब मां ठीक ममभेगा, उसे भेजेगी । पर वात् म लगा कि पावती खुन ही आई नहा हागी रोई होगी । धू घट उलटन न उलटने उमका ट से घिग्धी बध गइ थी ।

वह बाघ था क्या ' वह अंग्रेजी के बन्त उपवान पत्ना था अंग्रेजी की फिल्म देखता था कि सही-मही चुम्बन कसे किया जाना है उमका सब मकम नालज रखी रह गइ थी । पावता न शायद इस विषय म कभी सुना ही नहीं था । सुना था ता जान क्या ? घुटना म मूह छिपाया कि जो उटता नहीं था, अकडता हा जाना था । थक कर वह पलम पर मा गया था । पावती वहा गठग बना बडा रही था, कितना ममन्नान-बुनान पर भी नहीं आई थी ।

लटे-नटे मक शरार म वही दापहर वाला विपला कौघन रगी वहा उगाव । सानिया क पमान और सेंट का मिली-जुली गध । गध कि जा पहन पहल उसन 'बाच पार्टी' क अवसर पर अनुभव की थी । तत्र भी वह घूप स घाट किए अनमना-मा लेटा था, धमपुग की ही साचना, मां के, कम्मा क, शायद पावती क सम्बध म साचना-मा । वह उमक करीब रन म पनर कर बठ गइ थी ।

तुम क्या मोच रह हा ?" मुँह स मिगरट निकाल वह उठ बठर था परशान-मा ।

'बुद्ध नहा, कुद्ध नहा ।'

क्या मुनहरा त्तिन है । थाडा तराग ?'

'म ? मैं ता तर नहा सकता ।'

अर अन्छा मैं तर आज बडी गर्मी है ।' उमक पाम हा खट हा उमन एक मटक स डिपर खोल अपना पनली मूनी फाक उनार दा थी । नाच वह तान-मफेन धारा का वन्निग मूट पहन था । तान रग म शरा

'पर तुम सुचमुच चाहत हा क्या ?'

हाँ मोनिया हाँ ।

गर्मा ने एक बार कहा था 'दास्त, यहाँ जरा बच कर चलना । य लाग इस्तमाल के लिए हैं बंधन को नहीं । पकडाइ म झा गए ता बंध जाद्याग फिर छट्टी नहा । रस्तोगा इसी चक्कर म फसा बचारा प्रिम नी ।'

तोनिया हम इसी सप्ताह रजिस्ट्री करवा लें ।

एकदम इतनी जल्दा क्या है ?

"नहीं इसी सप्ताह ।

हाँ, उसे जल्दा था, शमा का विजय वह नहीं हान दगा । किसान का पता खनन से पहले वह विवाह कर लगा । फिर उस उस धमपुरा म नाली के बाँधे ती जिन्दगी म लौटना ही बच है लौटगा भी किस आर क्यों ? "सार्वाटिस्टस पूत म बहुत होगा चार मौ की नीबरी मिल जाएगी । उतन म रिटायड पिता, धीमार माँ को लेकर कहीं रह सकगा दिल्ली मे । यहाँ मे दस हजार रुपए कम्मो क याह को भन चुका है । दो ढाई सौ रुपए महाना ता यूँ ही भेज देता है ।

कमरे म सिगरेट का धुआँ भर गया था । हलक की गंध से उस मिचली होने लगी । उठा कि कुछ राा ही लिया जाए । टिनर तो नहीं मिलगा अब काफानेक हा सही । बाब का कमरा वसे ही बन्द था । कई अपवाह उठा थी कि उसका प्रापेसर से अनवन हा गई था उसने आत्महत्या कर ती क्योंकि उसका एक्गपरीमेंट सफल नहा हा रहा था । वह "मटना डिस्टन्" था । बाब ! बहुत मेघावी था वह लडका । आँगा पर माटा चश्मा चढाए वह कुछ न कुछ करना रहता था हरलम । किसान ने कहा उसका श्रोक डाउन हो गया आवर बक से ।

कफटेरिया अब तक खानी हा गया था । एक नाग्री लडकी मजा की मफान म लगा थी । नापा और बक त वह एर कोने म बटा ।

भूख थी पर खाना दूभर हो रहा था ।

वह अमरीका जाएगा, सुनकर पावती ने तुलसी का चौग छत पर अपने कमरे के बाहर लाया था । छत की यह बरमाती उन लाना का कमरा थी । ऊपर तीन की टाइम घर का फालतू सामान भरा था । गद्दे रजाई जो मेहमाना के लिए बनाए गए थे, फालतू वनन पुराना चर्वा गरम कपड़े, दिवाला की हटडी खिनीन । वह ठीक से जाए और ठीक से नोट, इसी से पावती तुलसी के नीचे दीपक जलानी था, पूजा-अन करती थी और अान के समय वह उस दख भी नहीं पाया । वह अनग थी तान दिन को । उन फालतू लानाई सौ रुपया को भी उने अपने हाथ में सौप नहीं सका जो सब खर्च के बाद उसके पास बच रहे थे । उसके मन्दूक म ऊपर रखकर चना आया था । नहीं उमे पावती स प्यार नहा था । उम अनडवेनल्ल नडकी स भला किसे प्यार हा सकता था ।

काफी के बडवे घूट निगलता वह मामने बठी बाव की गल फ्रँड सूजी का बाव क पक्के दोस्त जाज के साथ बातें करत दखना रहा । दफ्त के समय भा वे दाना साथ साथ खडे थे । जब सूजी राई था तो जाज क कंधे पर सिर रख कर । किन्तु पावता जब राएगा ता ता किमबा कधा हागा कौन हागा ।



कमाई



आज सुबह से उसके गिर में हल्का बद है। वडे ही बेमन से वह जल्दा-जल्दी तयार होकर घर से निकली। निकलते निकलते दरवाजे के पास नगी लटर बाक्सों की बतार में अपने लटर बाक्स में भाँकना नहीं भूली है। जानती है डाक दो बजे से पहले कभी नहीं आती और अभी आठ भी नहीं बजे हैं, पर उसका मन घर से आने वाली चिट्ठियाँ में भरमत्ता फिरता है। मुश्किल सबसे बड़ी यह है कि छ-सात रोज के इन्तजार पर चिट्ठी आती है और मिनट दो मिनट में पढी जाती है। जैसे ही पढ़ कर रमी जाता है, नई चिट्ठी का इन्तजार शुरू हो जाता है।

कभी कभी तो उसे लगता है कि दिन-ब-दिन जिन्दगी बद हाती जाना है और चिट्ठियाँ दूर के घटाघर की आवाज। उसे लगता है कि जो यथाथ है वह भ्रम हुआ चना जा रहा है और जो वास्तव में भ्रम है वह यथाथ-मा उस जकडे है। वह डर जाती है।

अप्रेल का महीना है। सुबह की हवा में अभी ठण्डक बाकी है। मरक पर धा उमने स्वेटर के बटन बन्द करते हुए घड़ी का तरफ देख लिया है। दस घाने में दस मिनट और हैं। वसे तो हस्पताल दूर नहीं और वह पदल भी जा सकती है पर इस दश में उसे लगता है कि पदल कोई चलता ही नहीं। एक-आध बार पदल गई तो उस बहद धकेनापन महसूस हुआ और फिर कितन ही लोग बाद में पूछत हैं घाशा, आज सुबह मुझे घाईन म्टीट पर देखा था मैंने हान भी



किया पर तुमने देगा हा नहीं । यहाँ जा रहा था इतनी सुबह ?”

कही नहीं जरा स्टोर तक जा रही थी ।’

वह टानती रही है भव तप । सुबह की घूप म चमकती अपना सुनीपाम और सफे रबर क जूत दस वह धाडी कतसा गई है और किनारे स हट पड क नीच हा गई है । कन हा का बान है । किनारे खडा थी कि सर-से खोसला की गाडी बगल स निकल गइ । वह कट कर रह गई थी । वह तो अकेला था शायद उसे पहचान नहीं सका होगा । खड-खड एकाएक उस अपने पर बहद दया भान लगी है और जा है कि घर लौट जाए और खूब रोए । पर कम भान म पाँच मिनट बाकी हैं और उसे काम पर जाना है ।

सामन की डोनट-काफी शाप स एक भादमी आधा साया डान्ट हाथ म लेकर बस स्टॉप का तरक बडा भा रहा है । वह मन ही मन म हिसाब लगा रहा है कि दश म इस समय शाम होगा । घर पर खाना बनकर तयार हो गया हागा और माँ वारा-वारा सबका बना रही होगा अरे शामू अपने बाबूजा जी का बुला कि खाना तयार है और गुडटो रत्ती का भी बुला भई । मे क्या साग रात यहाँ बधा बठा रहूँगा । और फिर बहन भाइयो का शोर हम यह नहा खान हम गाभी अच्छी नहीं लगती भिण्डा कपी नहीं बनाई कल ही ता बनाई थी, रोज रोज वही बनगी तो ।’

“तर बाबू जी जिगडेंगे अब खा ल गुडडा । य नकरे अभी क ल समुराल जाएगी तां रोज याद करेगा माँ के हाथ का खाना ।

उसके सिर का दद बहुत बड गया है । सामने स बस आना दिखाई नगी दे जाती ता वह जहर मुड कर घर वापस चली जाती । चाह फिर जो भी हाता । बस धाईन स्टॉप स चल हान्डरिज पर बाए मुडी । खामता का घर वहाँ स लिखाई देता है । खोसना नया-नया भाया है यहाँ । डिटराय स आत हा उसन बडा-सा भालाशान मकान खराना है । दो-धा कारें रली हुई है । एक गुन चनाता है । दूसरा

बाबा के पास रहती है। काइ कह रहा था उस बीस हजार डालर सालाना मिलते है। बीस हजार डालर डेढ लाख रुपया साल। उसन हिमाव लगा लिया है और एक लम्बी साँस छोड दी है। इतना कमा रहा है और फिर यहा बसा हुआ है। वह साचती है कि उसे इतना पसा मिल ना फोरन बिस्तर गाल कर दिल्ली का ही टिकट बटवाए।

हस्पताल का सालह मजिला इमारत दूर स दिखाई दन लगा है। उसकी उगली उमके नाक के सूने छेद पर आकर तनिक रक गई है और हाथ उसने गादी म गिरा लिया है। छ या सात बरस का थी वह। आगरा मामा के यहा गर्मी की छुट्टिया म गए थे। इस बात का भी अटठारह साल हा गए। नाक कान बाधन वाला उनकी गली मे आया था। मामी न कहा कि लाया लग हाथ लडका की नाक बिधवा ली जाए। मा का ता ज्याण इच्छा नही थी पर वह स्वय ही उतावली हो गई थी

नही माँ, कप्पा और गुन्ना की ता नाक म लोग है हम भी पहनेगे।”

नाक बिधवाई जरा भा राइ नही और तासरे दिन उसकी नाक पर खूब बडा दाना बन गया था।

कप्पा और गुन्ना न खूब छेद उसे। 'जस्टर तूने चने खाए हए - तभी नाक पर चना उगा है। हमन मना नही किया था।

और जब घागा कटा ता घाँस से भर भर पानी बह गया था। छेद म मामा ने नीम क सूने तितके का पहल तल म नरम कर फिर थूक म भिगी भिगा कर उस पहनाया था।

दिल्ली के लिए जब व वापस चलन लग थ तब मामा न हल्कासा बन्द बाराक हीर की बणी की लींग ला दा थी जो माँ न उज कर रख ती था। काँ चार बरस पहले जब वह बी० ए० क पहल यथ म था वह लींग उम पहनन का मिली था और तब स वह उस

ही रही थी। पर परसो एक साथ म काम करने वाली कुछ बठी अरे यह नाक मे क्या पहना है ?' बात अनसुनी कर वह खिन्क गई थी। जानती थी कि साधिन पूछेगी तुम वहाँ की हो और उस कहत हुए लाज लगती है कि वह 'इण्डिया की है।

उस जब यह नौकरी मिली तो पहले दस दिन उसे बच्चा के बाड म काम करना पडा। वह काम उसे ननिक बुरा नही लगा। कुछ व्यस्तता, कुछ नयी-नयी नौकरी ने उसे सोचने या महसूस करने का मौका ही नहा दिया। पिछल पाँच दिन स उसकी बदली बढ व मान मिक रागिया के बाड म हो गई है। पहले ही दिन से उस वहाँ बहद बुरा लगता है। उसे अपने पद की हानता का एहसास एकाएक बहुत अधिक हो गया है। उस लगने लगा है कि वह अपने प्रति अपने देश के प्रति कुछ लज्जाजनक काम कर रही है। वह रात रात भर सो नही पाती है और बकावट से टूटते शरीर को उसका जी हाता है किसी गहर से तालाब म डान दे जहाँ से वह पूरी की पूरा स्वच्छ होकर निकले।

वस हस्पताल से एक ब्लाक दूर रह गई। एक कम्पन उसके शरीर म होकर चना गया। जात ही उसे हैडनस व साथ उन दोनो प्रति बढ रोगियो के बिस्तर लगवाने हागे और फिर उन दाना को नहलाना होगा। भल मूत्र के पन उठाने का ता शायद उस फिर भी धार धीरे आदत पड जाएगी पर रागिया को नहलाने म उसके शरीर का रामी रोमी घूणा से भर जाता है। फिर उस इस सबकी आन्त नही। वह बूढा बेहद भारी है और उसस सम्भलती नही है। हैडनस का परसा काफी शिकायत उसस थी। कहीं छ फुटी वह अमराकन औरत, कहीं एक सौ पाँच पाँड की वह खुद। पर किमी से कह भी ता नही सकती। डर लगता है कि कहीं घर तक बात न चला जाए।

पिता जी को बहुत बुरा लगगा। वह सोच भी नही सकन कि भाशा ऐमा काम करना हागी और तिस पर गौड ब्राह्मण हाकर।

पर अवध और ही तवीयत का जीव है। उसी ने तो जार द दकर यह नौकरी करने को कहा है। हिन्दी में उसने एम० ए० किया है। कोई और ता नौकरी मिल नहीं सकती। एक यही नौकरी थी और अवध का बार-बार कहना, "हाथ की मेहनत की बदर सिफ यही दश जानता है। आशा, इसी से इतनी तरक्की की है इसने। यहाँ ता लखपति का लडका भ्रस्रवार बाँटता है और बड़े-बड़े लोगो के बच्चे होटलो में वेटर का काम करते हैं। तो हम में ही क्या लाल लगे हुए हैं जा भूगी मायतामा को पकड़े बठे हैं।'

अवध से वह डरती है। बहती कुछ नहीं कभा। उसे हस्पताल में क्या-क्या हीन काम करने होते हैं और वह अपने आप को महतराना जसा महसूस करने लगती है यह भी उससे बताया नहीं जाता। जिसे खुद नहीं दीखता उस दिखाना क्या।

हस्पताल की साडियाँ चढते उसे याद आ रहा है कि जब अवध से उसकी सगाई हुई थी और उसकी सहलिया को मालूम हुआ था कि वह अमरीका जाएगी तो उसे अपने घेरे से बाहर किसी अच्छी, किसी बड़ी दुनिया का जीव मानन लगी थी। उनकी ईर्ष्या में आदर भी था और उनक भीतर विस्मय कि आशा में ही ऐसा क्या है जो उसे अवसर मिला है। अवध कहा करता है कि अवसर के सिफ एक लट होती है, बाकी सिर गजा। जब सामने आए पकड़ लेना चाहिए, अथवा पकड़ में नहीं आ सकता।

शायद वह ठीक कहता है। जब डबलरोटी खाते-खाते उसका जा तग आ जाता है तो उसको गरम-गरम मक्ई की रोटा याद आती है और सरसा का साग जिसमें ताजे बिलोए मक्खन की बडीसी सफ़्त मफ़ेद डली डबकियाँ लगाती है। यह सोचकर तो उसका दिल ही बठ जाता है कि अवध ने अभी पढाई शुरू ही की है और पीएच० पी० करत उसे चार साल लग जाएंगे। सडक पर, मिनन जुलन वालो से तो वह कतराती है कि कहा कोई उसकी नौकरी,

३० ७ हम माहर त्ति रात क

विषय म न जान जाए ।

तब टाइम म आणा जल्दा जल्दा हस्पताल का भात्रियाँ उतर कोने के ड्रग स्टोर का तरफ जा रही है । उस याद नहीं रहा था कि यहा बतन हर दो मप्ताह म मिलता है । उमके बतन का पहला-महला चक्क आया है । वह हिसाब लगाती जा रहा है कि छोटी ननद की गुडिया लनी है बडा ननद का स्वटर । दानी बब स मगा रहा है । रती न बटरी स चलने वाला छोटा टप रिवाइडर मगाया है और गुडडो न बहुत नित्ता है जीजी रेवलीन का निपस्टिक भज दा ।

उमकी चाल म हम समय एक अजीब तरपरता है । वह एक्कम भूल गइ है कि उमन मफ्त यूनीफाम व नइ स त्तिन बाल रबर क जूत पहन है और यह कि घुटने स टगने मक उघनी उमका टागा की भव तीन दिन पुराना हो गई है । उन पर छोट छोट नए बाल उग आए हैं । उस यह भी याद नहीं है कि वह अभी नस भा नहीं है मिक नस महायिका है जिस अपन यहाँ दाइ बहत हैं ।

एक और नील की नागिन



आज यह उसकी आखिरी क्लास है। इसके बाद सिर्फ वार्षिक परीक्षा और परिसाम। उसका परिसाम लगभग तयार है। क्लास की परीक्षा के स्थान पर उसने एक लम्बा पेपर लिखकर लान का दिया था। थोड़े-से पेपर जांचन और बाकी हैं। घर जान से पहले वह यह भी कर लगी। आज ही ग्रेड शीट रजिस्ट्रार के आफिस में द्याएगी। अब यहाँ ग्रान का मन नहीं करेगा। बहुत प्यार हो गया है उस पिछले एक मान में इस इमारत से जो पहले किसी रईस का महल था और अब स्थानाय कालेज है। इमारत के पिठवाड सँदियाँ चूमती छोटी-सी भील है और भील में कालेज के बोटिंग क्लब का बड़ा-सा याच।

वह अपने डस्क पर अक्सर चाय के ठण्डे हाते प्याल को रखे भील का हर लहर को गिनने का यत्न करती है और दूसरे किनारे पर के घन जगल के रहस्य को सुलभान की भी कोशिश अक्सर उसने की है। सबसे अधिक रूिश्ना उसका भील के जल से रहा है, युगो पुराना रिश्ना। कभी खुश हुई है तो भील ने उस गुनगुनात सुना है। उदाम रही है तब भी उसकी तकलीफ को सुकून पानी से ही मिला है। शाश्वत चिर स्थिर बेलाग, निर्लेप, आकाश का आईना भील का जल।

कनाम लेने का मन नहीं। उसके छात्र हैं प्रतीक्षा करत हगि। औरा से आखिरी दिन भल ही छात्र क्लास बढवा लें पर उसकी कनास में व अवश्य आने हैं। आरम्भ में उसे इन्ही छात्रा से भय लगा था।



एक दिन लता गुला रहा घेर लखवार हूँ हरेवा कर जानर न  
 म । म बात क। गान ह। लता—तब मे घब तब एक अन्त मूत्र म  
 यह प्रप। छात्रा म प्रीर व उमम घष है । नहीं छात्र क बात वह कभी  
 म प्रार नहीं छात्रा ।

घोर फिर लान नि म ता व लाग पनगितवनिपा जा रहे  
 है । बिना क नह नोकरा यही सिनी है । स्वय उमन प्रभा नया मुद्य  
 गाजन का यन भा नहा किया है । जब यही पढ़ीधगा तब टा ज, गग ।  
 नए की गुमा म अधिब उमका पुरान का माह मग रहा है । गन  
 कांन न था है । जीधो काविपी लोका दी है । मद्य सट घाए परर ममट  
 निग ३ । छात्र दाना नहीं हागा । शेषमपियर का कनक वम  
 मंत्र पर बिना मम गग है । कनथ न एक प्रश्न पूदन क निग हाय  
 उठा निपा है । प्रापक विचार म कियोपेडा वेश्या था या राना

मुमन ना य विषय पेपर के निए चुना था तुम हा बताया न  
 कि नमन क्या निष्प निबाना है ?

मे ममभता है यह राना स क्या अधिब थी । मेने अनग स नी  
 उसका जीवना पडा है । उममे भी यी निड होना है ।

क्या ?

दपिए उमके कितन प्रेमा थे—पोम्पे इलियस साजर  
 एनधानी ।'

'पहल यह बतायो कि तुम कियोपेडा जा एनिहासिब पात्र है  
 उसका बात कर रह हो या कि शेषमपियर की कियोपेडा का ?

दाना हा की । मुझ तो उनम अन्तर नहीं दिनाई देता ।

कनथ सबसे मुहजोर सबसे जिहा बडवा है क्लाम म उम प्रपना  
 ही आवाज स लगाव है । मूब बोलता है । उसे बुरा नहीं लगता । अन्तर  
 जब किमा आवम्मिब प्रश्न का उत्तर कोई नहीं दे पाता ता कौथ ही  
 चाह गनन ही सही हाय खडा कर उत्तर देने को उत्सुक रहता है ।

उन का कियोपेडाका की साथ साथ बात तो सभी हा सकती है पर

म उनका तुलना करें। तुम्हारा विषय होना चाहिए था जेकमपियर की क्लियोपेट्रा रानी या वेश्या? साहित्य के काम में सिर्फ साहित्यिक पात्रों की आलोचना ही हानी चाहिए। वन भी तो हर साहित्यिक पात्र अपने में पूरा है, एक इकाई है चाहे वह किमा अन्य यथाय पात्र का छाया या नक्ल या पारट्रेट क्या न हो। हम यहाँ तुलना है कि जेकमपियर ने अपनी क्लियोपेट्रा को रानी बनाया है या वेश्या?’

मुझे तो जेकमपियर की क्लियोपेट्रा भी वेश्या ही लगी। दगिए, जेकमपियर ने भी तो दिखाया है कि वह अपनी सखी से कहती है कि एनथानो खुश हो तो कहना मैं बीमार हूँ और उदाम हो तो कहना मैं नाच रही हूँ यह तो धूलता भरी बान हुई ।

कनथ बोलता जा रहा है। एक एक कर क्लियोपेट्रा के अवगुण उसके फरेव, मक्कारा चरित्रहीनता गिनवाता जा रहा है। उनमें कनाम की ओर देखा। अटठारह उनीस बस वष के लडके-लडकिया हैं। मिर भुकाए मून रह हैं। कुछ लडकिया जग जरा शरमा लती हैं। कुछ लडके किसी किसी फवती पर मुक्करा गते हैं। सबका बा०ए० का पहला माल है। सब अभी नया-नया ही है।

कनथ क्लियोपेट्रा की मात पुस्त की गबर ल रहा है। वह मन हा मन मुक्करा रही है। साहित्य में रहा तो अच्छा आलोचक बन जाएगा—दृष्टि चाह पनी हो न हो पर सफरता के लिए और प्रसिद्धि के लिए अपने प्रति अह जरूर हो अपने मन में अडिग विश्वास और विश्वास में अभिमान हा।

हस कर बाना, अरे यहाँ बेचारी क्लियोपेट्रा के पक्ष में कोई नयी बातगा क्या? यह कनथ का मत बिना चर्च के नष्ट जाना चाहिए ।”

कनाम चुप है। खुली खिडकिया से अत मर्द का गुनगुना हवा एक चक्कर लगा लौट गई ह। सोरियस हाकर बाला इतना समय अब नहा है कि हम तम्ब बिवचन में नाएँ। हाँ मन जा इस बार क्लियोपेट्रा



म उनकी तुलना करें। तुम्हारा विषय होना चाहिए या शक्सपियर का क्लियोपेट्रा रानी या वेश्या? साहित्य के कोमल ममिफ साहित्यिक पात्रों की आलाचना ही होनी चाहिए। वैसे भी तो हर साहित्यिक पात्र अपने में पूरा है एक इकाई है, चाहे वह किमा अन्य यथाय पात्र की छाया या नकल या पोरट्रेट बना न हो। हमें यहाँ खोजना है कि शेक्सपियर ने अपनी क्लियोपेट्रा को रानी बनाया है या वेश्या?'

'मुझे तो शेक्सपियर की क्लियोपेट्रा भी वेश्या ही लगी। देखिए, शेक्सपियर ने भी तो लिखाया है कि वह अपनी मर्गो में कहती है कि एनथोनी खुश हो तो कहना मैं बीमार हूँ और उताव हो तो कहना मैं नाच रही हूँ यह तो घूतता भरी बात हुई।'

कनय बोलता जा रहा है। एक एक कर क्लियोपेट्रा के अवगुण उसके परेव मक्कारा चरित्रहीनता गिनवाता जा रहा है। उसने क्लियोपेट्रा की ओर देखा। अटठारह, उन्नीस, बीस वष के लडके-लडकिया हैं। मिर भुकाए मून रह हैं। कुछ लडकिया जरा जरा शरमा लती हैं। कुछ लडके किमी किमी फवती पर मुस्करा लते हैं। मक्का बी०ए० का पहला माल है। मक्का अभा नया नया ही है।

कनय क्लियोपेट्रा का सात पुश्त की खबर न रहा है। वह मन ही मन मुस्करा रही है। साहित्य म रहा तो अच्छा आलोचक बन जाएगा—दृष्टि चाहे पनी हो न हो पर मफनताके लिए, और प्रमिद्धि के लिए, अपने प्रति अहं जकर हो, अपने मन म अचिंग विश्वास और विश्वास म अभिमान हो।

हम कर धाना, अर यहाँ धकारी क्लियोपेट्रा के पक्ष म कोई नया बातगा क्या? यह कनय का मत बिना चर्जे के नहा जाना चाहिए।'

क्लियोपेट्रा रूप है। खुना क्लियोपेट्रा स अन्त मई की तुनगुनी हवा एक चक्कर लगा ली गई है। सौरियस हाकर बाला, 'इतना ममय अब नहा है कि हम नम्व क्लियोपेट्रा म जायें। ही मन जा इस बार क्लियोपेट्रा

फिर से पढा कई वष बाद तो मुझे लगा कि नाटककार 'वह अच्छी है या बुरी है' जैसी छोटी बात पर मत व्यक्त न कर एक अनूठे पात्र को जन्म दे रहा है या शब्दों में एक अद्वितीय चरित्र का फलक पर रख रहा है। यह भी लगा कि ज्यों वह कह रहा हो कि उसने क्या-क्या किया इससे सरोकार नहीं, पर सरोकार इससे है कि वह यह सब इस सफलता से कर सकी यानी इतने महान सच्चाट विजेता जो उसके प्रेमी रहे वे अवश्य ही केवल उसके प्रेम की कला में निपुण होने के कारण मात्र से उसके नहा हुए। अवश्य प्रेम कला में निपुण अथ महिलाएँ उस समय बहुत-सी थीं और इन महापुरुषों को उनकी कमी नहीं थी।

नाटककार इंगित करता लगता है हो सकता है कि वह हर प्रेमी से वास्तव में हा प्रेम करती थी कि उसका महानता इसी में था कि वह एक को नहीं सभी प्रेमियों को धातमदान शरीरदान के साथ-साथ कर सकी। अथवा शरीर मात्र से कोई क्या किसी का बाँध सकता है। और यदि आधिक्य के अधिकारी राजा या रानी मान लिए जाएँ तो वह अवश्य ही अपनी उदारता में पूरी रानी थी विरल थी ।

लक्ष्मण समाप्त हुआ। सायियो से भी विदा हो गई है। कार उठा वह धर की तरफ चल दी है। एक एक कर कितने मोल के पत्थर गुजर गए हैं। जहाँ फिर लौटना नहीं होगा न यही देखने को कि कितनी कई उन पर जम गई है।

'यूयाक में आखिरी शाम है। सामान पिछले दिन ही जा चुका है। सिर्फ दो सूटकेस कार और विनो रूढ़ गए हैं। शाम को खाना सक्सना साहब के यहाँ है। कई लोग और आए हैं खान पर। एक कोलम्बस से भा युगल आया हुआ है थी और थीमना भारद्वाज। मान हा सक्सना ने बताया यह अनिन्द भारद्वाज पेनसिलवेनिया में हा रहता था स्टेट कान्ज में, जहाँ विनो और यह जा रह हैं।

धोपचारिकता का जगह नहीं रहा। अनिन्द पुरता है और विना

तुम जानता नहीं, इसी से पेनसिलवेनिया कसा है, कालेज कसा है  
 पटगाइ कसी है, मकाना की दिक्कत है या नहीं, आबोहवा इत्यादि  
 सबकी पूरी खबर मिल रही है। इधर श्रीमती भारद्वाज ऊपर तक  
 खाने से प्लेट भर कर सीधी हुई तो उसे आकर पकड़ लिया है  
 उन्होंने।

‘ता आप जा रही हैं स्टेट कालेज?’

‘जी! आप हँस रही हैं? कोई विशेष बात है क्या?’

‘नहीं, नहीं। मुझे हँसी यूँ आ रही है कि आपका भी जाने ही  
 स्टेट कालेज की हसाना से साबिका पड़ेगा।’

‘जा?’

‘अरे अनिल तुम बनाआ न इहें तुम तो उसे मुझ से ज्यादा  
 जानत हो’ उन्होंने पति की बांह से पकड़ कर बुलाया।

‘ओ छोडो मीनू, किस का जिकर छेडा है बनावटी अनिच्छा से  
 बाल वह।’

‘अरे बताओ भी, तुम्हारे साथ तो वह बगलौर न है। तुम भी  
 खूब पिटा थे कभी उम पर।’

‘यह तुम्हारी गलतफहमी कभी नहीं जाती। औरत ही न  
 आविर। अरे, मैं ता उमे पहल तिन ही पहचान गया था। इसी से  
 कभी लिपट नहीं दा। नहीं तो उसका क्या, उसके तो सब पहल भाई  
 साहब पीछे भाई डियर।’

‘सक्सेना साहब भी आ गए इस तरफ ज्या गुड की सुगन्ध पर  
 मक्खी।’

‘क्या मलिक की बात बरत हा?’

‘और किस की बात करें भई? स्टेट कालेज के साथ तो उसका  
 नाम सीमेट से जुड गया है। यह तुम्हारी मीना भाभी कह रही है कि  
 जन साहब की और मिसेज जन का उमके बारे में बताआ।’

‘काई होगी भी जिसकी बात तुम लोग किए जा रह हो?’

बिना न पूछा ।

' जान जायोग भाई जान जायोग । वहा तो जा रह हो । जान हा एक माघ दिन म उसस मुलाकात हागी । तुम नए-नए हाग वहा, ता वही तुम्ह बुलाएगी खाने पर रेस्तरा म कभी चाय पर ल जाएगा ।'

“तो अच्छी हा तो बात है , वह बोला ।

आप नहीं समझता आप ता हांगा घर पर जब वह इन आपकी साहज को मिनगी बहनाएगी दुलराएगा ।

छाडिए भी मैं नहा मानती । कुछ और बात काजिए ।

नहीं मानती ? माना देवी फुफकारी ।

आप उस जानत, जा नहीं । वह रेखु पूरा फाहशा है । जानता हा जहा यह काम करने थ बगलौर की लब म वहाँ वह अबला नडका नडका क हास्टा म रहता था । एक किमी का साथ ग्स रखा था । कहती थी मेरा भाइ है । पीछ लडका ने खोद कर निकाला उसका नाम गुप्ता था । गुप्ता मलिक भाइ बहन । वह गया तो उसक अमराका स हूर सप्ताह ट्र क काल आत थ, गिफ्ट पार्सल आते थ । तब तक तो उसका एक और भाइ निकल आया । कहती था यह आर्मी म था अब तक । फिर वहाँ आई तो गुप्ता का छुट्टा कर ला । अफवाह हुइ उसका भगतार आ रहा है कोई । वह आया । काइ भाटिया था । उसके लिए गहना कपडा लाया जूतिया तक लाया । महाना भर एक हा अपाटमट म रह फिर उमका भी पना नहा भला एसा भा काई हिन्दुस्तानी लडका दया है जिसकी जात न धम ? और गजब यह कि चहूरे स एसा भोला है हमती एसा साटा गन म बाहें भाभी मा' भाभी जी करक डालना है कि क्या काइ यकान करगा । नहा मानता ता दय तना जाकर । अभा चिटठी आइ है परमा मरी एक सट्टा का । लिता है वह र्मिया म दा हिन्दुस्तानी लडका क साथ अपाटमट शयर कर रही है कानि उसकी सण लडा न मकान बच दिया थी

उस वही कमरा नहीं मिल रहा। अजा उसका कुछ ठोक  
शादीशुदा को छोड़ती ह न क्वारा को सबका उल्लू बनाती।  
वे उल्लू बनते क्या हैं कोई दुधमुँहे तो नहीं हैं ?'  
पूछा उमने।

उम्बी माँस छोड़ वाली मोनू भारद्वाज 'यहा ता सम्  
आता। सब जानत है और फिर भी आँखो दस्तत जहर पीन  
यह कि सबको उससे इश्क हो जाता है।' तीखी नजर स  
का दम्ब लिया है जा खाने म व्यस्त है।

एक शब्द 'इश्क' कमर म भरी मिगरेट के धुएँ का परत  
कर टग गया है एक भड़ी गाली का तरह जो दर तक हव  
रहता है और अकमर याद आ जाती है मौक बमौके।









आज फिर जब बच्चा के सामने लह भगड कर गया है। मिम का जा है कि एक भारी पत्थर उसकी जाती कार पर दे मारे। बच्चे सब साध बने अपन अपन कमरा म दुबके है। मिम बटा है। न्यूयाक स्टेट म तलाक इतनी कठिनाई स मिलता है अयथा जल्दा ही उसका पीछा छूट गया होता। तलाक जब तक मिलता नहा वह पूँ ही आकर हर शनिवार बच्चा को मिलन के बहाने उमे मालता रहगा। पुरप का आहत दप है। वह कसे सह लगा पत्नी को बच्चा का अधिकार मिलना और कानूनन प्रतिमाह तान सौ डालर बच्चो के खच के निमित्त मिम को देना। शाम को खाना नही बनाया। बच्चो का दूध देकर मिम न गिलाम म थोडा जिन अपन लिए टाली। टेलीविजन खोलते उसने दाँत पीस।

‘डर्टी रट।’ मिम का आश्चय है, कभी इस व्यक्ति स उसने शादा बस की था।

दम बजे पेरीमसन देख कर वह उठी कि फोन बजन लगा। साचा उठाए, शायद जब हा। फिर घनमनी-सी उधर बढ गई।

‘हैलो।’

‘मिम।’

‘रुपा।’

‘हाँ अवेला हा ? कुछ देर बात कर सकती हैं क्या ? उधर भावाज टूट गई।’

'क्या ? क्या हुआ है तुम्हें ?'

बुद्ध नहीं ।

तू रो रहा है क्या ? लगा कि क्या एस रा रहा है जग कोई मर गया हा ।

क्या ! क्या मुँह स बान क्या रो रही है ? किसी न बुद्ध कह दिया तुम्हें ?'

मिम जानती है क्या भावर ससिदिष है । बान बिना बात भप मानित महसूस करन लगती है । और सग हा मिम के भाग अपन मन का गुवार निकालती है पर एस रोती कभी नहा ।

आ मिम लोग इतन गप्पे हैं मिम इतन बान नीच, कपटा मिम ।

तुम्हें किसी न बुद्ध कह दिया क्या ?'

नहीं

'ता फिर ?

वह फिर सुबक-सुबक कर रो दी ।

उस काल कपटी । मिम में मर जाना चाहती हैं । मझे जीना नहीं है । उस अत्र यहाँ रहना नहीं ।

पर जाना है ?

हाँ, मिम मुझे घर जाना है । मझे मरना है । तरे पास नीच की सोलिया नहीं है क्या ?

बकूफ लटकी । क्या तू इस समय महा आ सकता है ?

'आकर क्या हागा ? कर तिन ले गई है ।

दख, मैं उधर नहीं आ सकती । बच्चे सोए हुए है और मैं खुन कलान्त हैं, पर तू पहले राता बन्द कर फिर बता क्या हुआ है ?

हुआ बुद्ध नहीं ।

नहीं बनाना चाहती तो चल अचला है । अब तू टव म गरम पानी भर कर आधा घंटा नहा ल । फिर चाय पीकर सो जा ।

सुबह इतना क्लेश नहा रहगा ।

उधर राना दुगना हा गया मिम विन्न हा गई ।

‘ भव न तू बताना, न चुप हागी ?

‘मिम मैं जाना नहा चाहती । मिम लोग कितने ।

नीच हैं कपटा हैं । भर ता नई बात है क्या ? और तर मरन स क्या सब सुधर जाएग ? मैं बताऊ तू गधी है । तू साचती है सबन तरा उघार थाया है कि तू भला है तो सब भले क्या नहीं है ? मरा सुन न सब भले हैं न हाग । और तुम्हे मरना नहीं है । काई एक सात मारे तू दो सात भार मरती क्या है ? लिन से तरा भगदा हुआ है ?

‘ नहीं तो ।

ता फिर ?”

किसी से नहीं

‘ तू रोना क्या बन्द नहीं करती है ? दल तू इधर बहुत पड ग्नी थी । शायद तू जहरत स ज्यादा काम करती रही है और अगनरा मन ठीक नहीं तो तू किसी की सहायता ल । मैं ता तरी सहायना कर नहीं सकती ।

मिम पर मैं जिऊ कस । तू कहती है चुप हो जा । मेर बम का ता नहा न । मर घन्दर इन समय गाठें ही गाठें पड गद् है और दम घुट रहा है ।

‘ कहा तो मर्म पाना स नहा से, जम्बी साम से । धुनी हवा म कोई विनाय पड़ना शुरू कर द । जानती है कहना आमान है कग्ना कठिन, पर निदान क्या है ? सुबह तू किमा डाक्टर स मिम ।

‘ डाक्टर स ?’

हाँ तेरा मन अस्वस्थ है । तुम सहायता चाञ्छि जम्की जा दे सके । मैं यह दे नहीं सकता उससे तिरा तुन किसा दान डाक्टर के पास जाना होगा ।

पर डाक्टर क्या करगा ?

' करगा क्या ? शरार बीमार हो दवा ल्या । मन वामार हो ता वसा उपाय करगा । दर में एक बड़े छ छ मनश्चिचित्मक को जानना हूँ ।

'नहा, नही में ठाक हूँ मिस । मुझ कुछ नहा हुआ है । सब इतन घिनोत हूँ कि जीने का साहस नहीं रहा । इतना गन्गो कसे बेना जाएगो मिस ? '

'अच्छा अब तू जाकर नहा और सो जा । सुबह में आऊगा । ग्यारह बजे मिस न फान किया ।

'क्या कर रही थी ?'

बटी थी यही ।

नहाई नहीं ? साईं नहीं ?

' कसे सोना होगा ? मुझ से हिला नहा जाना तुमन इतना रात क्या तकनाफ को ?

कहती है क्या तकलीफ का ? अरे मुझ का फान करत हिचक नहीं हुई और अब मुझ पर इतनी बात बाद दा । चिंता किमा लेकिन क्या जरा नहीं माना ? देख जिसे कष्ट नेन है उसका बात मानत है । अथवा तुम्हें कोई अधिकार नहा था कि मुझ दुविधा म डाल । मिस बहद गुम्मा हो आई थी ।

'अब सन सुबह में नहा था सकती । मुझ बहुत काम है और मैं तरी सहायता भा नहीं कर सकती । मैंने अपन डाक्टर का फान किया था । यह उसका नम्बर है एच० आर० ५ ५५२२ । डा० आर० । सुबह तू उससे समय ल ले ।

पर मिस म डाक्टर का कहूँगा क्या ?

यह मैं नहीं जानती । म इतना जानती हूँ कि तू दुगा है और तुम्हें डाक्टर का सहायता चाहिए । अब तू वायना कर कि एक बार उससे पान जाओगी

गन्गो नया हागा ?

होगा तो तग शरीर काई मूल्य नहीं रखता ? वैसे यह डाक्टर ज्यादा महंगा नहीं है। विशेषकर विद्यार्थियों के लिए है यूनिवर्सिटी का और स। बहन भला आदमी है।

“मैं वायना नहीं करती। अभी इतना रोने पर मन कुछ ठीक है। शायद सुग्रह सब ठीक हो जाए।”

‘नहा तो समय ले लेगी ?’

हाँ, नहा तो डा० घाट में समय ले लूंगी।

अच्छा अब सो जा।

मिम गुनिया ।

‘सा तू बचा के रख वहीं और काम आएगा।

रूपा नहाई। रूपा ने चाय पी। रूपा ने मुनहरी शबाल के दस घाम पान पाने और अकेल कमरे में भरी रात में रूपा छटपटा कर राइ। गिराण का फोटा ग्योज कर निवान प्रेताशा वह हँसना चेहरा चूमा और फिर जार से दीवार में माथा फोड़ लिया।

हान ही में नई बनी दुमजिनी इमारत की मोटिया चढ़नी रूपा का मन हुआ कि अब भी लौट जाए। साइकोनाजिबन सर्विस की तस्ती के पाम आ वह शरण भर लड़ी रही। घड़ी साढ़े नौ बजा रही थी। साढ़े नौ बजे डाक्टर स उमका अप्वाइंटमेंट था, आफिस दा कदम भर और था।

कहिए ? मुनहरी घाना वाली सेक्रेटरी ने हरे शेड से रंगी पत्रकें उठाइ।

‘मरा अप्वाइंटमेंट है डाक्टर घाट से।’

‘श्रीमती मिग ?’

‘जी।’

बटिए, डा० घाट अभी आन हैं।

अधिक बठना न्ना पग। दो-एक मिनट में बाईं घार ~~कई दरवाजे~~ खानकर डाक्टर न उमने भीतर आने का मकत किया।



४८ ९ हम मोहरे दिन रात के

कम आयु का डाक्टर । नही उमका असिस्टेंट होगा । पर डाक्टर हा था । कमरे में मुबह की धूप थी । लिडका क नाच पाकिंग लान में कारें कतार की कतार भरी थी ।

“म रूपा हैं डा० ग्रांट । मिम भरियम ओब्रायन ने मुभस बायन करवाया था नि म आपस सहायता तू ।”

हा भरियम का कल रात फान आया था कि आप व्यथित है पर आप क्या स्वेच्छा से नही आई ?”

“जी, वह बात नही । मैं पहले कभा किसा मनश्चिकित्सक के पाम गई नही और मुझे भय था कि मैं कुछ कह नही पाऊंगा ?”

‘देगिए मानसिक चिकित्सा एक विशेष प्रकार का चिकित्सा है । इसके लिए आप किसी प्रकार बाध्य नहा हैं । वत सरोच भात्रिक है पर जो आप नही कहना चाहे वह न कहने का आप स्वातंत्र्य है ।’

सगा कि टूट कर जिस भागा में वह यहाँ तक चला आइ था वह भा सम्भव नही होगी । दध गल से बाला ‘मिम का कहना है नि मुभ सहायता का आवश्यकता है ।’

आपका अपना भा यहा मत है कि आपका आवश्यकता है ?

‘दो बडा-बडी डबडवाई वाली आंग्रे डाक्टर क घर पर त्रम गई । धूप का तार में कमचमाना घासू पहन एकाएक उभरा फिर धार बनकर ।’

“अच्छा आपकी आयु कितना है ?

“दुस्राम बय ।

विवाहित है ।’

‘जा ।

‘कितन बर न ?

‘तीस बय ।

‘नहीं, वह रिवर साइड में है। मुझे वकल फ्लॉशिंग मिल गया।  
 एक साल से यहाँ हूँ। वह रिवर साइड में पड़ा है।’

‘वच्चे?’

‘जा एक वकील है तीन साल की। वह दादी के पास है दश मं  
 न भर की था तभी हम यहाँ आ गए थे।’

‘पति से आपके सम्बन्ध कैसे हैं?’

‘जी?’

‘मुग्ध?’

‘मुग्ध? वह नहीं सकती, मैं शायद उनके योग्य नहीं हूँ।’

‘यह तो काइ बात नहीं हुई।’

‘वह मुझ से घणा करते हैं।’

‘कल आप इसी कारण दुखा थी?’

‘जी नहीं उनका इससे कुछ सम्बन्ध नहीं है। उनका घणा की  
 ॥ मैं घानी हूँ।’

‘तब?’

‘ज कट र?’

‘अच्छा आप पन्ती है?’

‘जी साशुल वक म एम० ए० कर रहा हूँ।’

‘आपका विद्यार्थी जीवन सन्तुष्ट है?’

‘या। डाक्टर पिछले कई महीना से हम फाल्ड वक के लिए  
 जाना पड़ा है। उस क्षेत्र में मेरी एक व्यक्ति से भेंट हुई। जब मरा  
 उस व्यक्ति से परिचय नहीं था तब मैंने सुना था कि वह बहद लम्पट है।  
 पर मैंने जब उसे जाना तब बहद सहृदय व भद्र पाया। यहाँ तक कि  
 मेरा दिन उनके नाम से निवृत्तता और रात में उसी नाम से हानी।’

‘तेमा क्यों?’

‘मैं उनके विषय में दिन रात माचन लगा। वह सदा इतना नम्र  
 रह और मेरा इतना खयाल रखत रह कि साथ ही वह

५० ॐ हम मोहरे दिन रात के

संघर्षों का हैं । '

अच्छा वह व्यक्ति कितनी आयु के होंगे ? '

' लगभग पचास । शायद अधिक या कम भी हो ठाक स नहा  
कह सकता ।

विवाहित हैं ? "

जा, उनका तान बच्चे हैं । "

"आपका उनसे मिलना कहीं होता रहा ? "

काम के सिलसिले में उनके आफिस में ही । '

और मित्रता बढ़ी ? '

जी ।

' कितना ?

' जितना मित्रता बढ़ सकती है । '

क्या आपका उनसे सम्बन्ध हुआ ? "

पिछले महीने में उनसे मिला । '

' उनके साथ ? '

' नहीं ।

सुभाव उनकी धार से था ? '

मेरा धार से नहीं था यह कहना तो गलत होगा । जा मैं उन्हें  
पर निगा था शायद जमा का टुकड़े पछ दे लिए । जमा मान  
साजिए ।

और यह सम्बन्ध पूरक रहा ? '

' अब तक पूरक में अनभिज्ञ था ।

किर ? '

डाक्टर बाच में स्ट्रोक की चार छुट्टियाँ पचा । हम बाच उनसे  
काम नहीं कर न टर्नोपान हा । पर मैं उमो सबसे विषय में गावनी  
रहा । छुट्टियाँ के बाद काम से आफिस गई । जगा कि बन्द म है ।  
काम नया जमा । जमा का फल करोगे, वहाँ घुणा बना रहा ।

मैंन फान किया। वहे ठण्ठे मे वान। कन आफिस गड डाक्टर उनकी आँवा म पहचान तक नही था। मैंन सोचा, मुझे घोसा हुआ। ताम का नाइब्रेगी से लोट रही थी ता मेर दखत उनकी कार म एक अय भहिना बठी। मुबह उम आफिम के बाहर भा दया था। डाक्टर, मुझे नगा कि मेरे जिम्म म काचड मनी है और दुगघ उठ रही है। मैं ननी जानता कस घर पहुँची। पर मुझे दुख हुआ कि मैं जीवित पहुँच गई हूँ। मैंने बइ तरह मरन की साची फिर मिम मे बात हुई।

“अच्छा यह बताइय कि क्या आप उनस विवाह की आशा रखती था ?”

“विवाह ? नहीं ता। वह विवाहित हैं और मैं भी।”

‘तो ? केवन सम्बध जारा रखना चाहती थी ?’

“वह नहीं तो कम मे कम पहचान ना चाहती थी। यह नहीं चाहती था कि एक दिन म अजनवा हो जाऊँ।”

पर यह आप जानती था कि यह सम्बध म्थाया नहीं होगा ?

‘नी।’

‘फिर इतना विद्रूप क्यों ?’

‘डाक्टर, एक विशेष ममाज म पनी उनक मस्कारा स जकडी मायनाआ को निभाती एक म्थी जब उन मय मायनाआ के विन्द्र इतना बडा या पतना ह्य कदम उठाता है और फिर जान जाती है कि यह जो किया वह सब किमी इननी छोटी, इतनी गदी, इतनी कुरूप वस्तु क लिए किया, तो मन म घिन ही घिन भर जाती है। यह गन्गी सनी सी जो लगती है—इसके साथ कैसे जीना होगा। माप कीजिए मैं रोना नहा चाहती पर मेरा बस नहीं है। बल साचा था कि मय रोना चुक गया है पर अभी।’

आप जिनना चाणिए रो नीजिए। उमम क्षमा नहीं माँगिए यह एक घण्टा आपका है। अच्छा आपन कहा कि पनि आपन घुम करन हैं ?”

५० ७ हम मोहरे दिन रात क

मेघादा भी हैं ।”

अच्छा वह व्यक्तित्व कितना आमु क हगि ?

नगभग पचास । शायद अधिक या कम भी हा, ठाक स नहीं  
बह सयना ।”

बिवाहित है ?”

ना उनक तीन बच्चे है ।’

आपका उनसे मिलना कहाँ होता रहा ?”

काम के मिनसिले म उनके आफिस म ही ।”

ओर मित्रता बनी ? ’

जी ।

कितनी ?

जितनी मित्रता बन सकती है ।

यानी आपका उनसे सम्बन्ध हुआ ? ’

पिछन मप्ताह म उनसे मिली ।

उसके बाद ?

नहा । ’

मुभाव उनकी आर से था ? ’

मेरा ओर स नहीं था यह कहना तो गलत होगा । जा मर बहरे  
पर निचा था शायद उमी को उहनि शब्द दे लिए । एमा मान  
लाजिए । ’

ओर यह सम्बन्ध पूरक रहा ?”

अब तक पूरक स अनभिन्न थी ।

फिर ?

नक्कर बाच म इस्टर की चार छुटियाँ पडा । इस बाच उनस  
बात नहीं नुद न टनीफोन हा । पर म उसी सबके विषय म माबनी  
रहा । छुटिया के वाक काम से आफिस गई । नगा कि बदल म है ।  
यकन नहा हुआ । उम्माद थी फोन करेगे वहाँ चुप्पी बना रहा ।

मैंने फान किया। वडे टप्पे न बाने। कन आफिम गइ डाक्टर उनकी आवा म पहचान तक नहा थी। मैंने सोचा, मुझे घाना हुआ। गाम का नाइबेरा से नीट रही थी तो मेरे दखन उनकी बार म एक अय मग्गिना बठी। मुग्रह उमे आफिम के बाहर नी दना था। डाक्टर, मुभ नगा कि मर जिस्म म कीचढ मनी है और दुगघ उठ ग्ही है। मैं नही जानती कसे घर पहुँचा। पर मुझे दुख हुआ कि मैं जीवित पहुँच गई हूँ। मैंने कइ तरह मरन की सोची फिर मिम म बात हुई।

अच्छा यह बताय कि क्या आप उनस विवाह की आशा रगती था ?

‘ विवाह ? नही ता। वह विवाहित हैं और मैं भी ।’

‘ तो ? कवन सम्प्रघ जारा रगना चाहती था ?’

वह नही तो कम से कम पहचान ना चाहती थी। यह नही चान्ती था कि एक दिन म अजनरी हा जाऊँ।

“ पर यह आप जानती थी कि यन् सम्प्रघ म्वायी नही हागा ?’  
‘ ना ।’

‘ फिर इतना विद्रूप क्यों ?’

डाक्टर, एक विशेष समाज म पनी उनके म्कारा स जकठी मायनाआ का निभानी एक म्त्री जब उन मर मायनाआ क विम्ह इतना बडा या इतना ह्य कदम उठानी है और फिर जान जाती है कि यह जो किया वह मव किमी इतनी छोटी इतनी गद्दा तनी कुरूप वन्नु के लिए किया, तो मन म घिन ही घिन भर जाती है। यह गन्गी मनी मी जो गगती है—इमके साथ कस जाना हागा। माफ काजिए मैं रोना नहा चाहती पर मरा कम नहा है। कन सोचा था कि मर रोना चुक गया है पर अभा ।”

आप जिनना चाहिए, रो साजिए। उसम क्षमा नही मागिए। यह एक घण्टा आपका है। अच्छा आपने कहा कि पनि आपस घृणा कन हैं ?”

५० १ हम माहर त्तिन रात के

जा उह जब स मालूम हुआ कि विवाह स पहल में किसी अन्य स विवाह करना चाहता था उहनि मुभ क्षमा नहा किया ।'  
वह घुणा कस प्रकट हाता है ?'

मुवह स शाम तक की त्तिनचर्या म हर छोट माट कायकलाप म । जिसम मरी रुचि हा वही नही करने दना । यह जानते हुए भी कि ववा स मुभे भलग करना पाप हागा उन्हाने उस अपनी माँ के पास छाट दिया । साल भर में बहुत रोई अपना बच्चा क लिए । फिर यह फ्लोशिप मिल गया तो यहाँ आ गई । नही ता जान जाती भा कि नहा । डाक्टर मुभ अपने स नफरत हो गई है । बच्चा मरी मुभ भूल गई एसा खत म लिखा रहता है । पति क पास छुटिटया म जानी है ता ताने दते हैं । वह नाराज हैं मरे यहाँ भ्रान स । और अब यह गिरावट और वह भा भ्रकारण ।

देखिए आप अपने को व्यथ सालिए नहा । पाँच साल के ववाहिक जीवन म यह पहला अवसर था कि आपने बाहर सम्बध स्थापित किए ?

जी सिफ विवाह स पहल गिरीश स प्रम था पर सम्बध नही वह शादी नही हो सकी । जब यहाँ इस व्यस्ति स मिलना हुआ र लगा दूसरा जन्म हुआ पर वह तो छलना थी ।

'श्रीमती सिग "यक्ति साधारणत वहा खाजता है जिसका अभाव हो । आपका सीधा-सा केस है । आप जो इतनी दु खी है तो जसा आपने वहा अपने सत्कारो की वजह स । अथवा मुभे तो आश्चय है कि इतन साल आपने एसा जीवन बिताया और सन्तुष्टि की खोज नही की ।'

मैने आशा की थी कि आप मुभे डाँटेंगे । आप तो मेरी गलता का गनता तक नहा कह रहे ।

नहा डाँटन का प्रश्न ही नही । प्रश्न यहाँ यह नही कि व्यक्ति का क्या करना चाहिए क्या नही । प्रश्न यहाँ यह है कि व्यक्ति जा

करता है, वह क्या करना है ? आपन जो बनाया, उसके अनुसार आपकी किसी म रचि थी । वह स्वप्न बीच में भग हा गया । विवाहित जीवन में असन्तुष्टि रही । मानसिक कनश नी । आप एक व्यक्ति में मिली जो लगा इस अभाव को दूर कर देगा । "आप घावुष्ट हुई, उस व्यक्ति में आपकी तपित मिलनी थी । उस आपन पुनजन्म कहा । वह आपके विवाह में पहने का स्थिति में लौट जाना दुःखा । '

डाक्टर आपन का मैं शायद गमभती है, पर यह जो हा रहा है इसे नहीं समझती ।

इस भी देखिए । आप उमम प्रेम करनी लगीं ? पर वह विवाहित है और शायद उस व्यक्ति का छोटे-भाटे अस्थायी सम्बन्ध स्थापित करने की आदत है । स्थायी सम्बन्ध के लिए न उमकी आयु है, न स्थिति, न शायद भावनाया के लायक मन स्थिति । वह उन लागा में सम्बन्ध स्थापित करने का आदी है जो ऐन सम्बन्धों के आगे हैं । अब आप भिन्न थी, आपन अस्थायी से अधिक चाहा । शायद वह व्यक्ति भ्रमरू गया कि आपको उससे वास्तव में प्रेम है और वह डर गया । '

डर ? वह एमे नहीं कि किसी से डरें ।'

'धामती सिंग एक पुष्प जो भयभान है वह मला सुदृढ हान का भान देता है । यह जरूरी नहीं कि वह आपका पहले से कम पसन्द करने लगा हो पर वह अवश्य आपसे दूरी चाहता है अपना सुरक्षा के हेतु क्योंकि शायद उमकी इसमें कोई भावना मिश्रित नहीं है । यदि है तो वह उम स्वीकारन की स्थिति में नहा । अब रहा आपकी मृत्यु कामना का प्रश्न तो मेरी राय में आप इस व्यक्ति के सम्पर्क में विलगुल न आएँ । क्या ऐसा सम्भव है ?'

'सम्पर्क यथाम्भव कम हा सकता है, टटना अभा सम्भव नहीं । दो एक महीने अभी काम बाकी है ।'

'ठाक है । दूसरी बात आप इस समय वरुन टन्स हैं वक्ष में या पट में दद महसूस हाता है ?'



जी, भातर सब ऐँठता है ।'

आप खुल कर सौस लीजिए और अपने का व्यस्त रहिए । जब तक आप ठाक समझें कार भा न चलाइय ।

वह कस हागा डाक्टर, कार नहा चलाना अपने स भागना हागा । भ अभी अपने स भागा तो जीवन क्या जाने लायक रहेगा ।

बाहर धूप पर बादल आ गए थे । ओस भीगी सी रूपा उठा ।

'अगल सप्ताह आप इसी समय आइय । तब भविष्य के लिए कुछ सुभाव खोजेंगे ताकि आपकी जो अमला बामारा है एकाकीपन उस दूर किया जा सके और अगर इससे पहले आप जरूरत समझें तो फल कर लीजिएगा ।

एक सप्ताह म पनभड आ गई है । पत जा लाल गुनहरे हा पके स वक्षो पर अटक थ एकाएक भड गए है । शार्से नगी है न्नि मातमी । कमर म आज धूप नही । डाक्टर की गहरी ब्राह्मी आया म चमक है पहचान है मोहा है चिंता है ।

आज रात का तयारी म पहले ही स हमान हाथ म है ?

नगी डाक्टर आज रोकगा नहीं । अभी उस न्नि का सजा बना

है । बना क गजर स भर मुह की इमी ।

आपका भजा हुआ गुलाब मिला । दलित अभा भा मिला है ।

शुक्रिया ।

मैन तो बहू रक रक कर भजा था और नजन क बाट भा पद-ताया रहा था ।

क्या ?

बात यह है कि मुझसे पुरख डर जान है । पूसा म मरक भा था ?

आपका उम व्यक्ति स कि सामना हुआ ? एक मारिया दादा कमर म उतर आइ ।

अ, बात नहा हुई । मैं आरका बाता पर माचना रहा । डाक्टर

अभा ना कभा-कभा दम घुटन लगता है और शरीर धिन से भर जाता है और मरने की तबीयत हाता है। डाक्टर ऐसा छाटा काम मन कस किया ?

'किए थामती भिग, आपकी बातों से यह अनुमान लगाया है कि आपका अपन विषय म कुछ निर्धारित मत है कि आप ऐसा हैं और आपको यह तकलाफ इमलिए नहीं है कि आप उस व्यक्ति से प्रेम करना है बल्कि इमलिए है कि आप अपमानित महसूस करती हैं। और जो घटना आपके लिए इतना महत्व रखती है वह उस व्यक्ति के लिए तो आपे दिन की बात है। अच्छा यह बताइय आपने अपने भावों जावन क लिए क्या साचा ? आप क्या पति से तलाक चाहता है ?

नहीं, नहीं तो ।'

'ता इस स्थिति म जिमम पति आपसे प्रेम नहीं करने आप रहना चाहती हैं ?'

'डाक्टर विवाह हमार लिए एक हा आर का जान वाला रास्ता है। और फिर तलाक जो मुय की उम्मीद म लिया तो कौन जान वह मुय हाथ आएगा भा कि नहा ? डाक्टर जीवनता एमे हा चनाना हागा ।

'पर, यह आपका निश्चय है पर एमे जावन म जा स्नह का अभाव है वह आप फिर कही खाजेंगा। वह स्वाभाविक बात है और फिर चिति ऐसी हा हो सकता है। या ता आपका यह स्वीकारना हागा या फिर बष्ट के जीवन का छाड मही रूप से सुख खाजना हागा। अभा आप बचन म हैं। या ता बचन क जावन को सुधार सम्भारिए या छोड दाजिए। देखता हूँ कि छाडना आप नहीं चाहता और सुधारना आपके पति के ही हाथ म है। एम म बाहर से अभाव पूरा हाना ।'

'नहीं। डाक्टर नहा। यह जा एक बार हुआ क्या कम हुआ। अत्र फिर एमा नहा हागा। दाबारा कभा नहीं ।

५६ १० हम मोहरे गि रात के

बिना ठीक है। इस बीच कुछ और ?" विषय कुछ नहीं। सिर्फ बार चलाते समय में धोना बन्द। ततो है। उमसे ध्यान बट जाता है और तज नहीं चलाती और इस घापक विषय म बहुत बार सोचा मैने। सोचती हूँ आपका सगपता की भादी न हो जाऊ या लगता है पतनी रस्सी पर चल रही हूँ बदन-बदन पर सतुलन रखती ।

प्राय रोगी अपने मानसिक चिकित्सक के प्रति स्नेहभाव हा जाते हैं। यह भी स्वाभाविक है। मैं समझता हूँ आप स्वस्थ है और सस्कार बहिए या आपकी सुबुद्धि यह चिकित्सा आपकी लाभ नहीं दगी। इस स्थिति म अपने सप्ताह के लिए अर्वाइ टमेट नहीं गीजिएगा। भविष्य म कभी भी आपको लगे कि मैं सहायक हो सक्ता हूँ तो आप पान कर लीजिए डाक्टर के ताते या मिय के ।

जी धन्यवाद।

बार तक पहुँचते रूपा के सोने म फिर गाँठें नर गई हैं। बमड ब पस पर स्टीयरिंग से टकरा कर आगू टपकन जा रू हैं। मन्तन विगड गया है। यह गिरी जा रही है नीचे गहर म। अचकार न बाहू पगार लिए हैं।

कुतिया का पिल्ला



न्यूयाक म उस दिन बहुत बफ पड्यो थी। सारे रामन बफ की मोटी लह से लक गए थे। सर्दी इतनी थी कि हाथ पर सब सुन्न हुए जा रहे थे। दोपहर को सूप निकल आया। घूप म बफ की सफेती से आँवें चौंधिया रहा थी।

सडक के किनारे किनारे बढम रखती सान माल की जनी पाटरमन अपने लाल उनी काट की जेबा मे बाहें भरे और मिर को पर के सफेद हूड' से अच्छी तरह ढके बफ पर चल रही थी। उमके छून म बफ म बई-बई इ च गहरे निशान उभर आत, पर जेनी के परा को ठण्ड नहीं लग रही थी। उसने 'सो बूट' पहने थे जिनके भातर पनल का अस्तर लगा था।

जेनी बड़ी प्रसन्न थी। उमकी ममी ने आफिम जाते समय उसे चाकनेट क निग दस सेण्ट दिए थे। बीराह के ड्रग स्टोर से बण्णी नकर जनी चूमती हुई उसका आनंद ले रही था और धीरे धीरे इधर उधर देखना जा रही थी।

सूप जैसे अकस्मात उदय हुआ था वैसे हा धरण भर मे दुप्ल भा हा गया। बर्फीली हवा बफ के हनके बरण मुँह पर पेंवती चलन गयी। जनी न अपने काट का ऊपरी बटन बन्द कर दिया और तनिक नही म बदन लगा। हवा भी तज हा चली। दखन ही दखत धु ध इननी हो गई कि आगे का देग पाना भा सम्भव न रहा।

जनी को घरराहट बढने गयी। न्यूयाक यह नई-नई आई थी।

रास्न ठीक स पहचान नहीं मक्ती था । धु ध क कारण सब घर एक स दिवन लग थ । जनी न पर आग रता और दूर तक रपती चना गई । उम जगह जम जान के कारण बफ बहुत फिमलना हा गई थी । जनी स स्वय उठा भा न्नी गया । घबराहट म वह ब्नी मुह धुग कर राने की हुई कि मामन स भागसर मान एक तडक न बाँह पकड कर उस उठा लिया । वह नीला लहवा पाटर था । आयु यहा कोई आठ बप तकिन तीन डोन म वह जनी स काफी बडा लगता था । जनी दग कर सहम गई । पाटर का आननुम-सा बाला बहुरा और उमम चमकन सफेद दौत जस बाल जून पर बफ क बण । पाटर का ध्यान उपर नहीं था । वह बन्त प्यार स जना का चुप करा रहा था और उसक बपड भी भाडना जाता था । जना चुप हो गई ता योगा ' कृपान भा रहा है । मुम्ह कर्ी जाना है चना पड़ैवा दू ।

नहा मुभ घर घर का रास्ता बताना । जना न ध्यान घर का

नहा ।”

‘क्या ?’

‘कहाँ न, नहीं ।’ पीटर चिडचिडा कर बोला । जेनी न भी आग्रह नहीं किया ।

अच्छा, वल यही मित्रता । तुम्हारे लिए बैंक लाऊँगी । मरा बय है । मित्रता न ?

‘अच्छा ।’

पीटर साइकिन पर और जना पदा ही अपनी राह पर चल गिया ।

रात का साना मज पर उगाती मेरी बानी, पाटर मार्या कह रहा थी तुम किसी गोरी लडकी से बात कर रहू थे ?”

“हाँ माँ, वह जेना है । वह अच्छी लडकी है ।”

अच्छी है ? शप करो । इन वदमिजाज गारा से मित्रता नहीं करना चाहिए जो यह समझते हैं कि यीशु न सिर्फ उह ही बनाया है । जानन नहीं, हम व ह्य समझन हैं और जाने का अधिकार भा नहीं देना चाहत ।”

मरा बहबडाती रही । पीटर बडा अनिच्छा से सूप म चम्मच प्युमाना रहा ।

मान में पहन गुड नाइट कहने चारवरा कमरे म आई ता जेनी बोला, ‘मम्मी आज, मैं एक नया मित्र बनाया है ।’

अच्छा । वहाँ रहता है ? कौन है ?”

उमका नाम पाटर है । वह ड्रग स्टोर के पीछे बाल मवाना म रहता है ।”

‘ड्रग स्टोर के पीछे ता नीचा बस्ता है । वह क्या बाना है ?’

हाँ, है ता मम्मा पर है बहुत अच्छा ।

धुप रहो । इन जाहिन गेवारा म दोस्ती करने की मीन तुम्हें मनाहा बा पा कि नहीं ? टकमान में तुम्हारे बाबा मुर्गे ता बन्दूक-



बिगड़त ।

तकिन मम्मा पाटर बहुत त्यानु है । वह बिल्कुल पुरा नहीं ।

चुपचाप सा जाया । वह निया उसस दास्ती नहा रखनी ।'

बारबारा चला गई पर जेनी स उस रात साध्व प्रायना टाक स नहीं हो पाई । कल उसका जन्मदिन है और वह पीटर स कह आई है कि वह उस मिलन आए ।

पीटर दा घण्ट स, लाल कागज म लिपटा और सफ़्त रिबन म बधा चाकलट का पकट लिए खड़ा है । थक जाता है तो बर पर बठ जाता है । थोडा देर म उठ कर फिर टहलन लगता है । शाम का हल्का धु धनका हो चला पर जेना नहीं आई । पीटर काफी उतास हो गया है ।

तकिन तभी जनी तेजा स भागता हुई आई । लस का बहुत सुन्दर फाक पहने थी वह । हाथ म कागज के लिफाफे म दो केके के टुकड लिए थी ।

ओह पीटर ! बडी देर हो गई । ममा आने हा नहीं दता था ।

'फिर ?'

वह पिक्चर गई है । लो तुम्हारे लिए केके ।

'अरे हा जन्म दिन मुबारक । लो, तुम्हार लिए ।

'धन्यवाद ।'

जेनी चाकलट का डिब्बा खोलने लगी । पाटर बठा केके खात रहा । जनी सुशी स उछल पडी ।

'ओह पीटर तुम बहुत अच्छे हो । इतने सारे चाकलट । ओ जनी ने बराबर म खडे हुए पीटर के गाल पर स्नह भरा चुम्बन अकित कर दिया ।

'मारा ! पकडो ! ! बदमाश ! ! ! भागन नहा पाए ।'

पीटर और जनी हतप्रभ स देखते हा रह गए । पाटर पर डल,

पत्थरा, थप्पड़ो, मुक्कौ की वर्षा होने लगी।

“इतनी हिम्मत ! गारी लडकी को हाथ लगता है ! ! सपोला कही का। वचे नहा मारो।

उमत्त गोरा की भीड़ आठ-वर्षीय नाप्रो बालक। काले चेहरे से टपकता लाल खून सफेत्त बर्ष म बड़े सुन्दर चित्र बना रहा था। बिजली का स्वभ पकड़े पीटर वहीं डेर हा गया।

‘पीटर ! पीटर ! ! उसे मत मारो ।

जेना को घसीट कर कुछ लोग ले गए। वह चीखती रह गई।

‘वह मेरा मित्र है। बहुत अच्छा है। मत मारो उस ।’

सडक के उम पार एक धमार गारा बुद्धिया ने चमचमाती शेवरलट रोक कर भाड की घोर इशारा कर एक राहगीर से पूछा, ‘क्या भई वहाँ क्या हुआ ? एकमीडेष्ट ?’

बिना यह देवे वि पूछने वाला स्त्री है और स्त्रिया के आगे गाली नहीं देन, वह माग-मा, बदमूरत दाता वाला धमरीकी उत्तेजना से भरा बोना, ‘एक कुतिया का पिल्ला (नीप्रो) एक गोरा लडकी से बलात्कार का बच्चा म था।’

“गुड गॉड !”

कार तज़ी से स्टार्ट हो कर सिसक्ता हुई हवा हो गई।



एक नगर



पूर एक रूप का टिप कर के लिए छाड़ वह बाहर निकली । लंगूना आज देख लिया उसने भी । मान्यारा का नया सखा, घर बहद उमम घुटा घुटा और नकरी । जब स नई दिला भाइ है कितना न उमम पूजा कि वह लंगूना म कभी चाय पीन गई कि नही ? और उसक नवारात्मक उत्तर पर उम दया की दृष्टि स दया । इसालिए आज यहाँ घाई क्याकि सीम स्पए जहाँ खाने के लगे जम्पर वहाँ खामियत हागा हा । आज धकेले उसने वहाँ काफी पी ली है । बदन मिला था । पम म दा मौ क नोट घुभने रह थ । शाम भर मन भराना रहा था कि कुछ आज किया जाए ताड किया जाए ।

इण्डियन एयर लाइंस के घ्राफिस के बाहर बस भर किन्ना उतर । कुछ देर वह ठिठक कर दखती रही । एक घुनघुन घमरीकी महिला की रान श्रीशा का माला बिजली म भनमन करती, नील टूरिस्ट बग, घरदार हल्के सूटबम, कमर, दूरबीन थके चेहर । लन्दन, पग्मि त्रिनया, 'सूयाक' क्साफानिया, नई दुनिया । वहाँ शायद मांस खुन कर घाना हा । घुटता नहा हो वहा शायद लाग जीत हा वहाँ शायद त्रिन्गा बामार न हा ।

धीर धीर घना । घनपूर्णा पाछ रह गया । जनपथ क राति ना । इही उरही के सखा म त्रि रात लाग का ब्यापार । त्रिना का हर पन्नबम सखा के गिरज मन्दिर गुरद्वार यहा लाग । यही सब मिनता है । नकला उधर । नकली बात । घटरे क लिए रग राग्न ।

शाशी फॉच सण्ट की दी हैं, पर उससे लगाए नहीं जाते । भिभक हाली है । जब नई-नई आई थी तब उसे इला अजीबोगरीब लगती थी । आफिस स आकर इला नहाती ह नहा कर बिना कपडे पहने बाथरूम म चली आता है ।

शु गार मेज पर घण्टा बठी रहती है । अला बला लगानी है । मोटे हाठ तीखे लाल रगती है । भौं और पलकों को गील काजल से तराशती है । बगल म सीन पर सण्ट रगडती है । फिर सिल्क की साडी पहनती है गहरे रंग की और पेंटीकाट मलमल का कि साडी शरीर एक हो रहत हैं । इला उसपर हरदम विगडा करता थी । “आ लडका यह मूरत हा सूरत है तग कि इसका कुछ कजे-बनाएगा भी ? यह धला चहरा । इस शहर म इसका क्या होगा ? आ तुझे कुछ अवन मिखाऊ ।

न बाबा । म एस हा भली ।

पर एला मर मर भून भी गई हाता थी कि क्षण भर पहन वह क्या यह रही थी ।

यह राविम का बच्चा पूरा गया है । हांगा बहा का । मभी का एक हा मज । कभी-कभी जा म आता है किटमन की तरफ बटून लकर घाठ म लडका का टिकान लगा दू ।

दा वार वार का हल्का-सा हात मडक पर बजता है एना मम भुवाता अण्पी के गान पर चिनाटा काटता मलाप के बाल नरकी चनी नानी है ।

अण्पा यह इला एमी क्या है ।

कमा है ?

ननी कुछ नहा, मैंन यू हा पूछ निपा पा ।

तू उम नहा जानता तापा । एना बही ह । प्यारी है । मिन उमका जवान करारी है । मैं और म एन हा वानर म पटना पा । मैं ना एन बरमा म जानता हूँ । बुरा यह हुआ कि एक मरगर जा म

इमका लव हो गया। पर वह धा बारह बजिया। इससे शादी का चायन्य कर केलीफोर्निया भाग गया। इसने बहुत खत निम्ने पर एक का भी जवाब नही।

पोछे उमने एक सरदारनी से शादी कर ली वही पर। और इसे चीसरा महीना था। कहती थी भर जाऊगा। हमने बहुत ममभाया। रफा-दफा किया एक डाक्टरनी को डेड सी रुपये देकर। पर तमी से इस इला को कुछ हो गया है।"

यह जिसके साथ जाती है उससे ब्याह क्या नही कर लेती है?"

ब्याह? तोपी यह दिल्ली है यहा कोईकिसा से शादी-वादी नही करता। जानती है इला गॅग्लो इण्डियन है? और ऐंग्लो इण्डियन लडकी स कोई एग्लो इण्डियन शादी करे तो करे बाकी हिन्दू, मिख तो मव बायर हैं, एक दम नीच। समभत है कि लडकी के बाल कटे है स्वट पहनती है तो जरूर ही उसका "भारल स्टण्डड" भी स्वट के जिनना ही छोटा है।'

इला को सब तग करत हैं। आफिम का हर छाबरा बात, मिस टामस शाम को मेरे साथ चाय पाजिएगा, डिनर लीजिएगा? ' दस रुपये चाय पर उठा लिए किसी की कार माग नाए बायदे पर कि उसकी भी इला से मुलाकात करवा देंगे, और घर लौटते समय बेचारी को उल्टा साधा पटात है। पोछे अपनी हिन्दू बीवियों के पास लौट जात हैं सीधे मादे बनकर।"

तू बच्ची है। दो साल रह इस बमने म तो तू जानगी दीवारें क्या होती हैं।

अप्पी और ही लडका है। सबसे हमती बोलती है। पाम नही फटवन देती। किसी मेजर से सगाई हुई है। हर पन्द्रह दिन म वह दहरादून से आता है। तब अप्पा रान को लौटती नही। हैण्डग म एक साडी रख कर ल जाती है।

आज मुजह टुडडी के पाम पडे नील पर डेर-मी नाम का मालिश



करत डला उमके पास आई थी ।

बया तापी ? मैं ता सोचती थी तू बडी साधा है ।

बया हुआ मेरे सावेपन को इला ?

यही तो पूछनी है । यह निक्का क साथ बया है तरा ?

‘ निक्की ? ’

अर वही नानकचंद खना मिस्टर निक्का । तरा बास । सुना है, तू पिक्कर देखने गई था उसके साथ ।

तुम किसने कटा ?

उमसे तुम्हे क्या ? गई था तो गई थी । पर यह बता कि निक्की का छाड तुम्ह कोई ओर नहीं रहा ? देग तोपो, तू बडी अच्छा लडका है, अर तू बहुत उदास रहता है । अकेली रहता है । तरी अर लाग ज्यादा ध्यान नहा दन । कोई तेरे स बात नहीं करता । निक्की बहुत भना है । पोशाशन वाला आदमा है रोबनाव है । लच टाइम म तुम्ह से माठा बात करने लगा है ।”

इला ?

बुरा लगता है मरा कहना ? मुम्हे परवाह नहीं । मुम परवाह तरा है । जानती है कि वह शाशागुला है । उमका एक स्वीट हाट भी है । वह भी शाशागुला है । जब वह नही आ पाता तब वह आदिय का छावरिया मे इशक बघारता है । ममभी ममल म शाशागुला आमा शाशागुला औरतें हा पमल करत हैं । तर जैमा सीधा मता लडका उह घोर कर दती है । जब कि तू तिल ताड कर बठ जाएगा उमक लिए । गणगा । मरा मान भटपट ब्याह कर ल उम कवि महाराज स जा अना प्रभी तरे त्तिगटमट म आया है । मैंन तरे पीछ जान और दूर-दूर म ताकत दगा है । हान ता कवि शापल सब पगल है । तू बया कम है ? नहा ता आर निक्का बल काई और पटाएगा । यहाँ मव धार है ताया तू टग साम कर जा शाशागुला है । व एष ही बात जानन है मुना ।

ग्रामिण से जब वह बाहर निकली थी तब उसने एक बटी सी गली कार मटाट होती दनी थी, मिस्टर खना की कार। बगल में चा जूडा बनाए कोई बटी थी। निक्का ने तोपी की ओर देखा तब कहा।

उम निन मिनेमा हात के अंधेरे में उसने तोपी की उगलिया होठी पर रभे रखी थी। एक हाथ से वह उस धीरे धीरे महलाता रहा था। 'एकदम नूनन का चेहरा है सन्तोष तुम्हारा तोपी के कान में उसने कहा था।

भाग तबिए में भीगा चेहरा रगडत हुए वह सिसकी। धर का याद उभर आई। विभा, कीद्व जब स्कूल से लौट कर पूछते हैं "मम्मी, बुझा कहीं गई है ?'

माभी चाख कर कहती है, "मर गई है।'



कोयला भई न राख



जमे हा वह बाहर आई उस पर निगाह पड़ गई। विलाम के रग-मा चटक नाल उमकी पशुटियाँ नाखून-सी तराशी, दा परत खुल चुकी थी और बीच का हिस्सा, मन्दिर के कलश-सा भरपूर और बुजिया ना नुवाला, अभी बूँ था और सभे में। गीली घाम में उमन घुटन टक, काँटा स बाँह बचान उमकी आर हाथ बढ़ाकर उम अपन हाठा स मटा लिया। कहीं था यह अभी तक? पहले लिखाई क्यों नहा गिया? इतन जिन इसका कली, रहस्य का तरह पत्तो में ही पनपनी रही क्या?

भान्तर साकर चाकू स उमन उसकी लम्बी लष्णी के सिरे का कलम का ताँह निरछा बाटा और पानी के गिलाम में रख दिया। इस वह टड का म्या। टें का कमरा गरम है। कमरे की लिडका दक्षिण की और खुलता है जिसके बाहर धूप दिन भर छनती है। गरम कमरे में गुनाव कुछ ही घंटा में पूरा खिन्न जाएगा भीतर की खुशबू सिमेन्ट हुए और एकदम उम कमल-मा दिखाई देगा जिसे उमन साला पहने उधल मल पानी के तनाव में देता था।

दु मिंग टयन के बड़े धान्नि के सामने वह ज्यों-ज्यों अपन लम्बे घन धाना में बधा पुमाने जा रही था त्या-रयो बाला की लट्टें सिमट कर रेशम के मच्छ-मो मुनायम और धमकदार हाती जाती थी। टें की दग उस बहुत जिन हो गए हैं। पिछता दफा जय मिना थी ता टड ने कहा था मरू, धक्कर मुनना रहा है कि पूव बूँ रहस्यमय है और

वहाँ के लोग बहुत गहरे । आज पट्टी बार उमका मतलब समझ आया है । क्या सब ही दूसरा का मत या मान रखने को लोग अपना यो सब छिन्न भिन्न कर देते हैं तोड़ देते हैं ?”

‘वह तो कहानी थी टेड हमन का सा उपनम करत हुए उमन कहा था ।

मान लिया कि कहाना ही थी पर तुम्हारी बल्पना म ही मही बिसा न तो उस जिया ।

रिश्त अपने यहाँ टूट जाते हैं ऐसी आसानी से जैसे दा दादाका का माथ । ताड़ हा दन पडत ह । या था कही कि अधिकांश मागा व जावन म इन आध वन और बहुत चाह रिश्ता का टूट जाना ही मरने बन्नी घटना होती है । एसी घटना कि उमके बात की जिन्गा मिए गुजरा करती है, जा नहीं जाता । पर छाडा । माता पुराना बान हुँ । हम तब छाट थ और बहुत साम्य था ।

यहा तो मैं पूछना चाह रहा था क्या वह सचमुच हा माहा था ?

उठा और हाथ में फूल लिए अब वह बाहर आई तो शुरू अप्रल का सोना मडक पर माना परत-ना लिपटा हुआ था जिम पर वृक्षा की छाया के मनमाने गोठने बना लिए थे। आकाश में कुछ हल्के बादल छिन्पुट याद से घिरे हुए थे। वह कदम बहुत सकोच से उठा रही थी कि कोई घास में खिली जगती डेजी कुचल न जाए। कमिस्ट्री बिल्डिंग के पास पहुँची ही था कि उसे रक जाना पड़ा। बिल उसके सामने आकर गड़ा हो गया था।

क्या मैं फिर कतरा रहा हूँ न ? बिल की आवाज में बहुत शिकायत थी।

नहीं तो मैंने तुम्हें जात दखा ही नहीं । '

'सा तो तुम्हारी पुराना आदत है। खुद यहाँ और मन समुद्र पार। घर की याद आ रही है फिर ?'

तुम्हें पता है न फिर पूछन क्या हो ?'

इसलिए कि यदि मरा जरा भी सुन लो तो यही घर हा जाए, और न यह उदासी हा रहें। मच मरू, तुम मुनती क्यों नहीं ?'

बिल।

'अच्छा नहीं जाने दा। नहा ता लगोगी अभा सस्कति, सम्यता इत्यादि का अंतर ह वाली ज्योत्सली दलील दन। पर एक बात कहे दना हूँ मरू तुम अपने को जब तक धोखा दोगी। तुम्हारी दनीलें दूमरा का विश्वास भल दिला दें, तुम्हें तो छन नहीं पाता ? खर अब और कुछ नहीं कहूँगा। यह फूल मुरभाने लगा है।

हा, इम पानी के बाहर बहुत देर हो गई है।

बिल का लम्ब-लम्बे डग भर कमिस्ट्री बिल्डिंग में जाना वह देखती रहा घर फिर क्या रिया के पास बनी बेंच पर बठ गद। बिल नाराज होकर गया है। उमका मन उसे कचोट रहा था। बिल सदा उसके लिए कुछ-न कुछ करता रण्णा है जा अब नाग यहाँ कभा किसी के लिए नहा करन। बिल बहुत मेधावा है, आकर्षक ही नहीं वह अत्यधिक



सोरप्रिय भी है। फिर क्या वह दिन के धाराह स तनिक भा पिघलना नहीं ?

क्या दिन के बहान बनाकर टाटना रहा है ? अपना महा बनाना चाहती। क्या है आगिर ? स्वयं का क्या कांडो के भाज के लिए सुरक्षित रण छोड़ा है उसने ? और दिन को लेकर तो उसका रथ मट सना उस भगड कर अतग यूनिट म चला गई था। उसने सना का बमरा छोडन स पहल ब्रिजेट स कहन सुना था गुस्सा मभ इम-लिए आता है कि मैंने ही उन दोना का मुत्ताकात करखाइ था। पर मैंने साधा था कसक म ह म मकयन भी धुग्या नहीं। बडा साधा है। मुझे क्या मालूम था ।'

पर खली तू जानती है यह मरु का कसूर नहीं ।

जानती हूँ इसका नहीं इसने कपडा का है। जरा यह स्वट पहन ल तो गिरा इसकी आर दमे तक नहीं।

तू क्या मन छाटा करना है सब ठीक हो जाएगा। फिर लडको का तुझे कौन सा कभी है।

'जा भी हो इतना मुझे मानूम है कि बिल कोई शाक भाजी पर जीने वाला नहीं। उसके साथ छ महीने मैंने गुजारे हैं और यह सफ जरा भी मास मछली नहीं ।''

एक तेज सिहरन उसके शरीर म हावर गुजर गई। बेंच का पंवर टपटा था और साडी की परत म से काफा दर स महमूस हो रहा था। टांगना के पास पास उसकी साडी भी ठण्डी महमूस हो रही थी। गौली धार स साडो का किनारा भीग गया था। यहाँ पता नहीं सब चार्जे ठण्डी क्या हुआ करती हैं। खासकर वारिश। निला म वारिश सना सुहावनी हुआ करती था।

उस शम जव वारिश से वह और त्रिनी सिर स पर सब भोग गण थ और हवा के थपेडो से बचने के लिए टपकते नीम के बोचे सड थ तब भी वारिश तनिक ठण्ण नहीं लगा थी। कितन साल हुए हागे

उस शाम को ? वह शाम जब अचानक भटके से विनी न उसे अपन तरफ गीच उसके होठा पर कुछ खोजते से अपने हाठ रख दिए थे ।

“अर हटो, क्या करने हो कोई दम्य लता तो ?”

देगा करे ।

स्वय उमने ही अपन रक्त म खोलत उस उवाल का अनसुना क वमा फिर कोई शाम नहा ग्रान दा था । स्वय [उसन ही खोजत हा का जबाब दन के आतुर अपन हाठा म दात गडाकर अपन को स द ता था ।

विना मैं अगल सप्ताह जा रही हूँ ।’

पर सरू तू नहा जा सकती ।

दवा, तुम मान ला ता अच्छा हा है । मेरा प्लन २१ तारीख पक्का है ।

सर तुम्हे हुया क्या है ? बताती क्या नही ? ऐसे चला जाए क्या जम कभा जाना पहचाना ही नही था मुझे एक दूसर को ?

मुभ अमराका स ग्निरी लनी है, लाक्टरट का ।’

वह यहाँ नही मिनेगा क्या ?’

पर वही स लेना है न मुझे ।

सरू, वहाँ बहुत सर्दी हाती है । मुझे सर्दी अच्छा नही लगत सर्दिया म नरे परा की उगलिया मूज जाया करती हैं । और वहाँ बफ बहुत गिरनी है । लाग भा सुना है रुत्ते होते हैं ” जान किट विनय जिना की आवाज म थी, कितनी दीनता ।

‘जागा विना । जानता हूँ यह सब, पर जाना तो है मुभ । क्या विचरित हात हो ?’

सरू मेरा क्या हागा साधा है तूने ?

तुम अभी जरा मरे माह जाल म उठने हो । देखना भू समय भा नही लगगा ।

सरू ।’

पुरप समय-ममय पर मर हैं, और काडा न उह हाम किया है।  
पर कभी प्यार के तिम नहीं।”

‘भूठी।’

पोन ग्यारह की कनाम परम होने का घण्टा बकश स्वर न बजन लगा है। आस पास की सभी बिन्डिया ने ढंगे लडके लडकियाँ उगार दिए हैं। कितारों सभासता वह उठी और जल्नी-जल्नी अपने विभाग की ओर चली। विभाग की पहली मजिल म मेल हम है। आज शायद फिर पिता जा का चिटठी आई होगी कि तिम मिनत ही फौरन लौट आए और वहाँ नौकरा तलाश न कर। विभाग का अध्यक्ष का कनाम है कि नौकरी अभी नहीं देखेगी तो फिर सब निपकियाँ हो चुकेगी। उसे जल्दी ही पाँच-सात जगह आनाई कर देना चाहिए।

वह किसकी मुने ? क्या वह पिता जा की बात का उपादन कर दे और यही वही काम ल से दो चार मात्र क लिए। फिर किमा दो कमरे के अपार्टमेंट में अथकचा बस्बाद याना रा और टेप पर गिकाड की पुराना गजरे मुलने मुलने समय निरान \*। समय ता निरान जाएगा पर हर शाम का वह भयानक आधा घण्टा जब हर जगह बजकरा काम का निपटा वह हाथ कर पनग पर भटता है और पा का दुआ करती है या सपह या वह दहना पहन जब किमा यान तिम का जाना जमक स्वप्न घन दन है और क राता राती जाग -ना है

उम आतुर चेहरे पर एक क्षणिक आशा की झलक जान क लिए उसे उन सब गिद्धा और भेड़िया को सहन करना पड़ेगा जा या तो इसलिए चन आएंगे कि वह अमीर वाप की इक्कीनी बटी ह या इसलिए कि वह अमरीका जाने म उनकी सहायक हो सकती है या इसलिए कि वे अपन दोस्ती स कह सकें "एक अमरीका से पी एच० डा० वाली लडकी का भा रिश्ता था पर यार शान्ती करे तो कितना लडकी स न कि डिक्शनरी मे ।"

उमका मेल दाक्स वाली था । शायद डाक ही अभी नहा आद है या सप्रेटरी ने वांटी नहीं है । वह जाने का मुत्ता और अदर आन एक छान से समूह न घिर गन । जिस लडके की लम्बा दाढा था, उसका नाम उसे याद नहा आ रहा था । वही बोला, 'अच्छा यह बनावो तुम्हारा पिता महाराजा है क्या ?'

एमा सौभाग्य मेरा नहीं । तुम क्या पूछ रह हो ?'

इसलिए कि यह राज राज नई साची, य नद्व अवरात हमन कभा तुम्ह वही साचो दुवारा पहन नहा देखा ।'

'आज जानता हो, विल्कुल बसन्त की प्रतिमूर्ति लग रही हा दूमरा बाला ।

बाश मैं बसन्त की सी मुदित मन भी हाना वह मुम्बराद ।

चला यूनियन म चलत हैं काफी पियेगे,' पहना बाला ।

'खयाल अच्छा है,' वह सवाच से बोली पर मेरा डाक्टर बकर से ग्यारह बजे का अप्वाइ टमट है ।

डा० थिमोन्ट बकर । वह फेयरी । पहन बाल न कीतूहन म पूछा ।

हाँ पर यह फेयरी क्या होता है ?

व ताना उस पने । दूमर बाल ने पहल स कहा जरा छेन्न तुम 'बनावो भई तुम हा बनावो इह । मुन से नहीं होगा । क्या नागनी है ।

मह 'फेररी' क्या होता है ?"

'तम्हे सब ही नहीं मालूम ?' दादा वान का मिटटा के रग-भा  
झाँखा म अविश्वास भरा विस्मय था ।

क्या होता है 'फेररी' ?"

व फिर हँसे । पहले वाले ने हल्के स झाल दबाई और हाथ  
हिमाते व सब एक ओर की बढ गए । वह सन्न सी सजी उह जाता  
देखता रहा । फिर कित्तारें उमन मेज पर रख दा, और बक गए अपने  
हाथ स झाँखो म उनका घिनौनी आवाजा से पढा किरकिरा को उसने  
घर स मला । एक अजब भय और तीखे दू ने अपना दश घर लिया  
था । उसका कलेजा मुटठी सा सिमट कर ऐँठ गया ।

माथ पर छलक धाए पसान का पौछन के लिए उसन पम म हाथ  
उाला । म्माल खोजती उसकी उँगवियाँ पस म एक पुरान तह किए  
पप से छ गइ । पत्र उसकी एक सटली का है । तम्बा चीटा गप्प के  
चीक उसन लिता था, 'बाईं सी थ, तुम्हारा जो नन्ना मोसा था उनक  
यहाँ फिर दस साल नया महमान आन वाला है । पहला ता लडका था  
न, मोसा पूव पोने का आस लगाए बठी है ।

पम स हाथ निहाल वह जरा मेज स टिका गया सटारा डूढ रहा  
हा थाण मुस्कराद और फिर हस दो एकाएक । नन्ना मोसा न कभा  
कहा था 'तरे पास क्या नहीं है सभ — तू मुन्टर है पना निता है पना  
है । मरा ता एक वहा है और वह तर माहजान म एमा पडा है रि  
बावला हा गया है । तू यह मुभ स कमा बन्ना ल रही है मरा मी  
नहा है यह जानकर मैं तभ अपना बटी सा माना था—सभ तू एमा  
न कर कि मैं इस बुनाप म अपने घट क घर का पार्श तक न पा  
सकू ।

वन् ट के पाम जरूर जाएगा । टट का कमरा गरम है । उसका  
गिडका क बाहर पूव गिनभर छतना है । बुद्ध हा घटा म गुनाब पूरा  
सिन जाएगा और मन्दिर क कला स इमर हृष्य म जकना मीरम

गिर जाएगा । तब यह ठीक ऐसा दिखेगा जैसे वर्षों पहले का वह कमल जिसे उसने उथले, मले पानी के तालाब में दबा था ।

आधे मुरभाए उस अधखिले फूल को कुछ क्षण वह सड़ी खड़ी मिना देने देखती रही । फिर कितारों समेटने लगी । पुरुष समय-समय पर मरे हैं और महिलाएँ भी, कीड़ों ने उन्हें हजम किया है पर प्यार के लिए कभी नहीं । झूठी झूठी ।



सरसी धरती





गुड इवनिंग लन्डन एण्ड जण्टलमन ! [वि आर अवाउट द  
लण्डन । ]

मीन वन्ट वमने उमने नीध भाका । वायुयान जिधर भुन जाना है  
उधर ही रोम की जगमगाहट बाह पमार कर उड जाती है और फिर  
ज्या उदाम-मा हो टहर जाना है, वायुयान दूमरी घोर का डाल  
जाना है ।

एक नम्रा मौसमी उसत । मोनो पर दुख रहे थे, कमर म भी  
दद मनमना रहा था । बेहरा सूना और बाल वजान हो गए थे । सात  
घण्टे का सफर उन्हाने डेढ दिन म तय किया है । दा बार वे  
कराची सं चने थे दो बार लौटना पडा और उमसे भी पहने बम्बई म  
हा छ घटे दर से फाईट चनी थी ।

कराचा म वे सब थक गए थे । बन्वे चीख रहे थे महिनाएँ सय  
इधर उधर पमर गइ थी । आगिर एयरवेज की बम मक्को हाटल ल  
गई था । होटल म चाय, खाना मिला । बिस्तर, कमरा भी स्वच्छ था  
पर उस नौद नही आनी अनजानी जगह । वह खिटकी के पास कुर्सी  
डाल अधवार म भीगरा का हो हलना सुनती रही थी और वह हँस  
पण था । भीगुर भी तो बँटवारे के साथ परन्तु क हो गए होंगे ।

उमने कही पडा था कि दोपहर के सन्नाटे म जब मूरज सीधा सिर  
पर होता है राम के भग्नावशेष तय लगता है अभी जी उठेंगे । अभी  
उनम घुड और नतन गूँजने जगेगा । घोडे और बग्गी

सबक जाग जायेंगे। समय वही ठहर जाता है हृदय ईंट पत्थर और हृदय लक्ष्मी का हा जाता है। मान भीषण व दरवाजा में उमन चहारा गया गया। मात्र राम काहरे में लीप लिया गया था। सगनबा सरस्वती के रंग का विजयता के सटटुभा का मुद्द बनारा को छाड़ कर एक भी हमारत नजर नहीं पडती थी—कासन पाण्य गिरज कद भी गहा गिर्के प्रघातर।

साइडवर्क का एक कुर्मी पर पाना साडी धाता एक नडका बनी हृदय से घाँवें बन्द किए पडी थी। पास में उमका हैण्डबग मगजान काग, गण्डन पड ध। शायद साडी को भनक था लकी का रंग वेह पीला धामार सा सगता था। भुक्त का उसका कथा छू कर काल प्रापकी तबीयत ता ठीक है ?

लकी न नहा मुना। मुना ता धीन नहा पाना। उगता से उसका भाथा दया, टण्डा था।

‘प्रापकी तबियत खराब है क्या ?

दो शब्दा से रगा पलके बडा-बडी बजनाइ झाँता पर स धीर धार उठी। हल्की भुँभनाहट भुँह पर फनी। जगाया जाना अच्छा नहा लगा।

‘गराई का समय हो गया क्या ?

नही, मुझ लगा प्रापकी तबीयत ठीक नहीं, घण्णा जगाने का नीयत मरी नहीं थी।”

एक उवासी रीकती बह बाना, ‘अर नवायन ता बहट सराव रही। मुझ ती उगा इस प्लत में जाबिल नहीं उतर गी। भीतर से सब उतर गया इतना दर में। अगर ममराका तक यही हाल रहा तो ईश्वर हो जान।”

‘उम्मीद ता है कि भीमम सुधर जाएगा, और इतना ऊपरनीक जाना नहीं होगा। तुम कहाँ जा रहा हो।”

बनीबनण्ड।”

अरे मच ? क्या पढ़न ?”

हा, वस्टन रिजव म फनाशिप मिली ह, एम०ए० साशल बक के ए ।”

यह अच्छा हुआ । मैं भा ता वहा जा रही हूँ । मरा मतलब लीवना । बाकी तिनन लागे स बात हुई, सब कही-कहा जा रह है । कोई पिटमबग कार्ड फिनडलफिया भुभे लगा कलावलड म काइ अपन श का मिनगा ही नही ।”

अर यह बात नही भन ता मुना है कि वहाँ अच्छा खासी भौड है म लागे की । आप बठिण न । आप भी वस्टन रिजव जा रही हैं या ?

‘नहा, मैं दो सान इन्तनशिप क लिए जा रहा हूँ कनीवलड फीनिन म । नकश क अनुसार वह तुम्हारे विश्वविद्यालय स ज्यादा दूर नही है ।”

आह आप डाक्टर हैं !’ उन बडी बडी आँखा म विस्मयमिश्रित आदर भर गया । ‘मैं डाक्टर लोगा का बडा मान करती हूँ ।’ वह हँसी मानो अपन अविश्वाम पर कि यह पतला-दुबला सावनी, बीमार दिखाई देने वाली लडकी डाक्टरी करन जा रही है सो भी अमरीका म ।

जब तक जहाज चना दाना एक ही जगह बठी रही । दोनो दिल्ली की थी ।

मेरा नाम आभा है आभा मिश्रा । हम लाग ग्रीन पार्क म रहते हैं । मरे बडे भया का ठेके का काम है आप ?”

हम लोग कराल बाग म रहत है ।’

अच्छा ? वहाँ ता मेरा बहुत-सा महनियो रहता है । आप किस जगह रहती हैं कान बाग म ?’

दशधनु गुप्ता राट पर कुछ गिरजे है । उनके चारा तरफ जा बस्ती है वहाँ पर हमारा घर ना है ।

आपन अपना नाम कहा बताया ?”

नाजमान टायगा

माता ! माता माता है ?"

जै हाँ !"

कनाबलड क ह्याइ घटना पर जाना जग हूइ । आभा का मिनन एक 'होस्ट फमिला' आई था । वह उम का म त ग । नाजमान को हम्पतान की तरफ से पूर निर्देश विषाफ म मिन गण । वह बस म टर्मिगम' तक गई । यहाँ म टर्मिगी लकर हाएल ।

नाजनीन उनभ स है जिह दग क अय साग विपकर न उरमुव होत हैं न र्नेपत है पर जिह नय नाग सहजता स मित्र स्वाकार कर लत हैं कयोकि वे जानत है वि यह वानगा कम सुनगी अधिक समय पर काम आगगा । व यह भा जानत है वि इस साबनी स्वचा के नाच बहुद नाक्षग मभा है । समयम यह मनाह मगविरा भा दे सकगा । नाजनीन नी यह जानती है । वह चुपचाप चाय का स्वागत करता है । जाल को मुम्बरा कर बिना दता है । कभी बाँध कर किसी को रगन का उसका जी नहीं हाता और अपना एकाकीपन वह रागियो के दुरा से, मुख से भर लता है । अपना पारतू समय अय डाक्टरा को डेट पर जाना हो तो उनका शिफ्ट निभा कर गुजार लती है ।

दिवाला पर सुना कनाबलड क भारताय छात्र सघ को और से बडा आयोजन है । नाजमान का फोन आया वि शाम को वेरावटा एटरटेनमट है वह भी कुछ आइएम से । नहा आइएम कुछ दन लायक योग्यता उसम नहा पर वह गुताबजामुन बना लागगा ।

चार पीन मूख दूध म नाजनीन न घोला मदा मिलाया, घोला थकिंग पाउडर डाना और मक्खन पिघला कर डाना । चाडे थाने ताजे दूध क छीन व दकर चार लोई तयार की और लाटमा का नन्ही-नहा गालियाँ बाधा, गोर्निया को गम था म तना, गुतावा हो जान पर उबरना चाशना म छोड दिया । चार ली क कराव गुताबजामन बनाए दा दिन म दिन भी क्या रात म । सुबह, दोपहर, शाम उधूटा पर

गुनर जान हैं । गत रह जाता है । अनुमानियम क आठ निटर साइज वाल भगत म भर क वह टक्का म रख गुनावजामुन दिवाना पर कालज नार् है । सबन बहुत पसन् किण हैं । कम स-कम दास महिनाया को लिख कर उमन रेमपा दा है । पर आभा स मिलना नया हुआ ।

आभा ड्रेसिंग रूम म हा "हा इतना दर । वह नागिन क गान 'मन लोन मरा तन डान' पर नय द रहा है । श्रीर आभा ने अपने वजयन्ता मालानुमा चहर का वास्तव म ही नागिन-मा बना दिया है हू वह श्रीर उसक नत्य न आडियन या 'पलस कर दिया है स्टज का । उनके सब तानिया पाटन थकन नहीं हैं । वस मोर वस मार का आवाजें हवा म नर उठता है ।

आभा स मिलना हुआ कुछ दिन बाद । नाजनान कुछ डाक्टर मित्रो क साथ काफा भाने गई था 'ट्रग स्टार' म जो कि वस्टर रिजव क पास ही था । पाद्य क्नावलड म बढा हगामा रहा । नीया और गारे सोला म अण्ड-अण्ड लूट, हूपा छिड गई । कितन हा लीण भर भिटे । घर जला दिए गए, दुकानें लूट ला गई । हस्पताल म बहद काम बढ गया । दो दिन कफ्यू रहा शहर म । कफ्यू हंग ता वह खरानारा को जाने का हुई ।

'नाज अकेल आभा वही नहा जाना जान न सावधान किया । पर क्यों जाज ? म ता न गारा हैं, न नाया । मुझे काई क्या कहगा ? फिर थक गई है यहा दावारें दयन कुछ ताजी हवा चाहिए ।

ता हम सब चनें साथ कार म । वहा चल कर काफा पीएंगे । वाप जाज, निण्डा और वह काफा और आईसक्रीम का आनर दकर वठ । घूम फिर कर वात फिर घा गई ।

इन नाया लोगा पर इतना गुस्ता आता है मुझे कि क्या बताऊँ । काम कर नहा सबन, सारा कमाड शराव जुए म पूँव आत है । साल म एव क नहीं, दो बच्चो क वाप जन्म हा बन जान हैं । फिर अपना

गराबी मुगलता क लिए गागा क पत्र जगता मान है । दो चार को  
दुःख स चार दन है जगता वही क ।

'श्री श्री जाज न निष्ण का चप किया । एक काला  
बहान मगजान रव पर भुका बाह पसिगा डट रहा था । नाजनीन  
काफी म धार धारे धम्मच चनाता रही अनमनी ना ।

तम्हारा क्या मत है नाज ? बाब न पूछा ।

भरा ' मन स क्या हाता है बाब । समस्या समय क साथ  
उपजती है समय क साथ ही नष्ट होता है मत से कुछ नहीं होता । '

बाब न नासमन्ना-सा सिर हिला लिया ।

"बात सीधा-सी है । जय स साइ है बट रव पढ चुकी है तुम्हारे  
समाचार पत्रा म भारत म गरीबी है लोग भूख मर रह है क्योंकि  
वहाँ अन्न न है आलस्य ह, प सपारा है अधविश्वास है और सबसे  
ज्यादा है उन्मानता । कां बुद्ध करना धरता नहा है अब यह हुआ  
अमरगा यकित का मन भागत की ताबी के वार म । बताओ उमस  
क्या हन निकला । समस्या तो बना रही वसा का वसी । किसी ने  
समाधान नहीं ढूँढा और समाधान हमतिण नहीं ढूँढा क्योंकि समाधान  
से सरत होता है आगाप लगा जता । मैं कहूँ कि गार नागा ने बुरा  
किया नाओ योगी को यो इस्तमाल कर और बुरा किया रग नर कर  
या कि नीग्रो लोग बुरा कर रह है घला को भट्का कर । पर  
इन सब धारापा से कुछ बनता नहा मैं तो उदास हाकर रन जाता  
हूँ और प्राथना कर जता हूँ कि हमारा अकाल गराबी और तुम्हारा  
यह रग भू का कनका समाप्त हो जाए । तुरत बुद्ध निर आप  
है । नाजनीन न भर घूट काफी गन म उताच नी है ।

चलन गये गा दरवाज म आना म मुठभन हो गई ।

'ओह आप ! मैं क्या स आपस मिलना चाह रही थी । सतीग  
मह ह हमारी डॉक्टर दागा और यह सताश गिल है इ जीनियरिंग म  
एम०एम० कर रहा है । आप, वहाँ जा रहा है ?

‘वन बोगो के साथ आई थी पर तुम कसी हो आभा ?’

‘अच्छे हैं मैं तो। सुनिए आपको फुसत हा तो रन जाइए न सतीश अपनी कार म पहुँचा दगा ?’

ये लोग दरवाजा रोक गडे हैं और बाहर से कुछ लाग भीतर आना चाह रह हैं नाजनीन अममजस म है।

‘क्या नही नाज तुम रको। बस अकेले अभी कुछ दिन बहा मन जाना।

‘धरका जाज बल मिलेंगे। बाब लिण्डा ! काफी के लिए शुक्रिया।

आभा सुंदर दिख रही है आज। सिल्क की बादामी साडी पर बड गडे पून छप हैं, गहरा ब्राउन। गले म उसी रंग के पत्थरा की माला है। एक चांग किए है। बाल कुछ बिखरे हुए है। सतीश के साथ चलत, अच्छा गगती है। लम्बा है वह इक्हरा लेटम्ट कट का सूट पहन है। नाजनीन कुछ और छाटी हा गई है, बलसा गई है।

‘पन्नाइ कसी चल रही है ?’

‘ठीक ही है, नमन जमन समय लगेगा। आपका कसा चल रहा ह ?’

अच्छा है बडा अच्छा बनीतिक है। डाक्टर लाग भी अच्छे ह। फिर चिकित्सा मे समार म ता हर समय कुछ-न कुछ नया बना रहता है।

‘तुम्हारे घर पर तो सज ठीक ह आभा ? पत्र आया होगा ?’

हाँ आया था। एक महीना हुआ। भया की तो फुसत नहा जाता। भाभी हैं मो उह हमारी याद क्या आएगी ? छाटा मनाजा है माचन बूल म पन्ना है आठवें म। उसने लिखा है। माउथ आगन भगाया है। एक एलत्रिम प्रमले का रेकाड ।

‘मम्मी डडा ?’

उह तो छ साल हा गए कार एक्माडेंट हा गया था आगरा जान समय दृष मे।



आह !

' घाग नहीं रहता है ? ' सताश न पूछा हम बार ।

ज्यादा दूर नहीं, बनानिक घोर यहाँ क नगभग बाब म एक  
अपाटमट मिल गया अछा सा । चना न हम नाग बहा बट कर  
बान करेगे ।

आभा को अपाटमट बहुत भा गया और भारतीय पराठ और भा  
ज्यादा । मचल कर बोला, डाक्टर दादा इतनी बडा जगह अकना  
लगता है तो हम रख लाजिए न ?”

'अरे जरूर । मैं तो कहन ही वाला था अकन अछा नहा लगता ।  
महगा भी बहुत पडता है । साचना थी कि शामत तम्त् किमा एसी  
सडका का मातूम हा जो शेयर करना पसन् करे ।

' किराी को कयो मैं तो है । मे तग आ ग हास्टन म । यहाँ  
अछा रन्गा । क्या सतीश ?

तुम जसा चाहो । हमारा जगह भी तो यहाँ न पाम हा है ।  
अच्छा है ।

आभा अपने दा सूटकेस लेकर आ गई । पत्रर ताराख का सनाश  
छोड गया है । रात म सोफे को मालकर पनग बना नाजनीन मा  
जाती है । पलग पर आभा का साम्राज्य हो गया है । बाथरूम म भी  
उसका अण, कचा, पस्ट त्रीम लिपस्टिक पाउन्डर, सन् नाट गाउन  
स्त्रीपर गावर कप स्पन मने कपडे रमोई म उसक बिन धुल कप,  
प्लेटें, मिन पढी पुस्तकें बटक म उसक कुछ अमाफोन रवा बड रूम  
म उसकी पच्चास तास साडियाँ चार काट सात स्वटर तान सण्डल  
दो हाउम बोट चार काने सफन् ताल पस और देवगागी पुरान पत्र,  
कुछ चित्र भताज गौर भताजा क अछी तरह फल गए है ।

नाजनीन ने चाहा आभा उस नाजनीन ही कहे डाक्टर दादा  
नहीं पर आभा का आदन छूटना नहा । नाजनीन भा जार नहीं  
वेना । अर दीदा स बधन लगता है और "डाक्टर म जा आन्

रहता है वही इन वनरसीव फर्नी पुस्तका, ढर लग मन कपडा, अन-  
धुल बतना था बुरा नहा मानन देना । सतीश क इधर-उधर छोडे  
मिगरट क टुकडो को भी माफ कर्वा लेता है और कभी सनाश की  
गाटा नाचे लडी हा ता भिभक जा परा को विसा अय दिशा म ल  
जाती है और बाहर खाने पर जा दो-तीन डालर लग जात है उन  
सबका भी सह लेन देना है और आभा मस्त है । वह जावन स वल्हा  
ल रहा है ।

जानता हो दीदा भाभी हम फिल्म देखन नहीं दना थी । कहनी  
था विगड जाएगी । जिना बाहा का ब्लाउज नहीं पहनन देता थी ।  
अब मा म तो कोई त्रि कर ल भाई भाभी स कमे कर और ता और  
हम अद्रप्रस्थ म जानती हो उस चिडियाघर मे पढन भेजा । कालन  
की बम से जाओ और त्सा से आओ । बडा मन जलता था और जानती  
हो हम उह क्या कहत थे अपना भाभी को ? ललन ।

वह क्या होता है ?'

नाला लागी के घर की यानी कुछ गवार बुद्ध अनपढ ।

तुम ता पूरा वच्चा हा आभा ।

नहीं दीनी तुम नहा समझागी । ईसाइ लागी म ता य सब  
रस्ट्रिक्शस नहीं होनी ।

नाजनान ने मुह पर लिया है । कज पापा का पत्र आया है ।

मेरी प्यारा नीनी तू जहाँ रह यासु की छाया तुम्ह पर बना रह ।  
उसकी रोगना तुम्हें रास्ता द ।'

नाजनान आज चिंतित है । सतीश बहुत जिन स नजर नहा आया  
है आज आभा क रग-डग ठाक नजर नहा गात । बल बहुत रात गए  
लौटा थी आभा और लगता था पीए है । सीनिया पर उसक मित्र नाग  
बुद्ध दर हंगामा मचात रहे थे । फिर वाय वाय टा टा  
आज सुबह म वह सिर दद लिए बिस्तर म पडा रही । नाम्ना नहा  
किया । वाली भी नहीं । नाजनीन हस्पताल से चौटी तो लग आभा

६८ ७ हम मोहरे जिन रात के

आज स्कूल भी नहीं गढ़ पड़न । यमन-नी नाननान ने आभा क आभो फान पर एक रेखाड रन दिया है ।

कय तब यह रोना मुनतां रहोगा द दो ? नाजनान दो धंती म खान पीन का सामान लेकर आइ है रण मडी यह रही है । रेखाड उनार नाजनीन ने आभोफोन बन् रिया बोली नहीं कुछ भी ।

वन मने कुछ मित्रो को बुलाया है बियर बनर वगरह से भाई है ।

हैं ! कौन-कौन आ रहा है ?

विजय मुराना है और विजय सहगल य उसकी गत पंडे मजी । तुम भी कुछ डाक्टर लोगो को बुला लो न । यह तो उस दिन आया था, नाटिया वह अच्छा दीगता था ।

अब मुना कर पृच्छा नाजनीन ने, गतीश नहीं आएगा ?

आभा ने जाने के लिफाफे रसोई को मा पर टिका दिए । कुछ दर गुस्त म गडी रही । नहीं उस नहीं बुलाया है । घूट ।

नाजनीन उठी, आज सब ही बहुत ज्यादा थक गई है । इतना ता पोर-पोर अभी नहीं दुखे । बीयर के बन रिगान कर पिज म चुाने लगी है । आभा हथती मे म ह दिए सूव गम्सा हुए बटी है । पर नाजनीन म इतनी शक्ति भी नहा कि कुछ पूछे । बनर क निव पिज को छत पर चुन उसने कुछ बेरोजीना चायत पानी म भीगने क लिए खाड लिए हैं उबल चनों का निचा रोज रहा है । यहा धीर उगा आज । भूख उसे नहा है पर शायद आभा भूखी हा ।

जानता हो डाक्टर दीदी यह गतीश का बच्चा पूरा पात्री है । इतना हमने उसक लिए किया और वह और वल उस जूनी चुनल के साथ डट पर गया । उसके लोम्त हम रह के कि यह लारज सन का पता पूछ रहा था । मुरा भरे गाला पर टपाटप आँसू बियार रह न । मैं सोचता थी, वह मुझे प्यार करता है । हम ता बडा भरता था । म सोचती थी ।

‘ क्या आभा ?

नही मालूम दीदी । य लोग एसे ही होत हैं क्या ?

‘ जानती हो मैं क्या सोचती हूँ आभा ? तुम मोचती हो कि सब नाग तुम्हारा उधार खाए ह कि तुमन उन पर दया दृष्टि कर दी है तो वे कवल तुम्हारे हो जान चाहिए । मैं माचती हूँ आभा तुम पाने की इतना अभिलाषी हो । दना तुम बिल्कुल नही जानती हो । दश की बात दूसरी ह । वहा सामाजिक बंधन इतना है कि जो भी लडका उह थादी अनुकम्पा करने लग उमी पर लडके जान दन को सयार हा जाते हैं ।

यह दूसरा समाज है । यहाँ जिस लडकी को चाह अटा-पटा ला । फिर एक सबध कर कोई क्या बठेगा ? वस तुमन सताश का प्यार तो चाहा अपना भी दिया ? प्यार कितनी तरह का हाता है—एक देन वाला ज्या मूरज की गरमाई जिसे छू ल जीवन दे दे और दत्ता रह एक पान वाला ज्या पतभड कि अपना भाक म सत्र समेटना चला जाता है, फून पत्ता, रग रीनक और दत्ता कुछ भी नही कुछ भी नही ।

आभा के आँसू रुक गए थे । काजल फना आँखें आश्चय से फन गई थी । गोरा रग राख हो गया था । एक अजाब घणा भरा हास्य उनक हाठ छू गया । तिरस्कार से भर गया उसका जी ।

तुम ? तुम्हें ? तुमन कभी किया है ?  
जाना है ? तुम्हें क्या मालूम प्यार क्या हाता है ?

नाजनीन का माथा बहुत तज धूम रहा है । छन का लटदू गिर पडगा । अभी उवलत चावलो की भाप उसके नामापुट म भर गई है । लगता अभा उल्टी हो जाएगी । छोला का चिन्ना उसने अच-बुना काउटर पर छाड दिया ।

‘ आभा यह तुम बना लेना तुम ठीक बहती हो शायद ।

नही दीदा गुम्सा नही हाथो मेरा मन टिकान नही ।

गुरमा क्या हानी है आभा ? मेरी जरा तबामन

से परिचिन भर भी हैं। यहाँ विद्यार्थी भी खूब है। लडक पर मर खे जूते मेरा ओर कर बठत है, लडकिया विना रक धूम्रपान करत चाबलेट च्यूइ गम खाता रहता है। धुएँ म झौंसे जलने लगती बठन का ढग बटा अमग्य लगता है पर अब झाली हो चला हूँ। १ म प्रवेश करन पर य लोग खड नहा हात और बलास स जान पन नही। इसका भी अम्यस्त हो गया हूँ। नही हुआ तो उन दो न का, व उतनी ही जिही है जितना माथ पर भूल जान वाला बात वह लट कितना ही उस पाछे धकलता है फिर सामन धाकर जाती है।

सुधा का चिटठा आज सुबह ही आ गयी पर शाम तक पठन समय नही मिला। बुध को दा कलासे पडाता है दा समीनार स्वयं म करता हूँ। प्रजुण्ट अमिस्टण्ट का मह जादन भा सहल नही। बम सुधा बहद लम्बे पत्र लिखता है सब गप्पें भर कर भजती है। ११ भर की बातें उसक पत्रो म रहता है। इसा स उ म अपने गन गान के समय तक क लिए बचाये रखता हूँ। अमरीका म जब सा धिरने लगता है सब शायद ही कोई व्यक्ति थकावट अमभव नि रह पाता हा। यही का शाम अपन यही का रगान शाम नही हान जिसम कितन ही सवाद भर रहत हैं, बहल पहल रहता है। यही हुइ कि प्राणो का अकलापन डुबान लगता है तवापन पतरान है। ऐमो शाम म सुधा के पत्र सूब काम धान हैं। अपन पत्र क बमर म बटा मजे पर आधा बच्चा उरला बस्वा साना दूध क गल म उतारत म घर स आय पत्र पन्ना हूँ और उहा क गहार पतूक बमरे म पत्र आता है। कानों म छन का पगा घर घर लगता है। छाट बहन भाण्या का नडाई मगडा सडक पर टु रिफ शाण रमोई घर म मा का छर छर नगामा छोक मिशन पराना सुगंध—सब पत्रा म सिमट भर बमर म बिखर जाता है। रिक्ता ना पत्र समाप्त कर निगाह उठान का साहन नही हाना। निर...

बाहर का टप्पा बाहरा भयानक लगने लगता है पर बतन तो धान  
 हात हा हैं पपर भी चक्करन रिसच का काम ता खर रहता ही है ।  
 वाय राय को कम कर लपटता हूँ निक में जूठे बतन समेट गम पानी  
 म साधुन धान दता हूँ । वाहे ऊपर को मोडत सडक के नियान बल्ब  
 भुतह-म निम्न बाल आवार बेंधा पर आलिगन म जकडे युवा शरार  
 दल लता हूँ । सोचता हूँ कि अगला पत्र कब आयगा ? ऐसी प्यारा-मी  
 चाटा बहन क्या सभा के होनी है ।

गर्नेगाई कितनी दूर गू है राशन पर कितन जुमू निवन,  
 कहा-कहाँ गू हुए कनास मे किम किस लडकी न मटिनी शा दगा,  
 ब्राँय प्र ष बना लिए मिमज वमा का कसा स्वपडन हुआ एक हिंदी  
 का युवक नेवक स्कूटर के एकमाडेप्ट म घायल होकस इरविन हस्पताल  
 म पडा रहा और अन्न न काल का ग्राम हो गया टाक्टर छुटटी ही  
 मनान रह गय, माई फयर लेडी पर कितना बक बला—के नीच  
 मुधा न निचा "भया तुमन जो पिछन महीन, स्वटर और काम्पेटिक  
 का पासल बेजा था वह अभी नहीं मिला है । मिल जाना ता अच्छा  
 रहना राना का दनी व इम्पार्डे चीर्जे । उसका ब्याह है, इसी दस  
 ताराय का । राना ! भया तुम जानन ती हो उस ? बनी मेरी सटल  
 राना उमका माँ बटून बामार है । जल्दी म सत्र कर दिया है । जानेज  
 भा नहीं आता । घर घान पर भा मिनती नहीं किवाड ।

नहा ! न मेर हाथ स बाँटा ही छूट कर गिरा है न हून्य का  
 धक्कन रक गई है न हा भेंधरा घौला के घाग घामा है एमा सब  
 वासलक म उनना नहीं हाता जितना लयको का लगनी मजा करनी  
 है । बबन बटा हूँ । राना, भया तुम जानन ता हा उम ।  
 जानता हूँ राना का ? पाँच फूट का गठ-मा शरार गहूँ के लान-मा  
 सुनहग रग निशा-ना बान जिन् हू रविवार को घाकर बू मुधा न  
 मिनन जाना और तात्र मन्नु का गीना मुग्ध स सबका भिगा जाता ।  
 व घान रि जा सुपन पर नात लय ही लान, हल्के और आवाग म

ये लम्बी कनात्मा उँगलियाँ थीं उनके तराशे हुए गुलाबी नागून ।  
क्या मैं जानता हूँ उस ?

रानी, राजा कौन है ?

सुधा गगन तरे भाई साहज छन रह है । मैं फिर नहीं आऊँगा ।”

‘ नया, तुम बड़े खराब हा । अभी चली रानी हम छन पर  
चनन हैं ।

तुम चली जाती रानी पर वह लाल सपट पीछे रह जाती जो  
‘राजा कहत ही तुम्हारे गाना पर तर जाती थी । वह शराब भी जो  
तुम्हारी कानी पुतलियो क आसपास डोरो म भर जाती थी और मारे  
बमरे म छनक जाती थी ।

गमिया की छुट्टियाँ का न बीतने वाली अगसाई दोपहणें तुम्हारे  
आने और जाने के बीच तो कग करती थी । करम की पग पट के बीच  
तुम्हारा सुधा से कहना, ‘ वह रेकाड लगा दूँ प्नाज ।

सुन मरे बधु र सुन मरे मिनवा सुन मर माथी रे ।

रानी राजा मिला ?

‘ थाप फिर छेहन लने सुधा आती है, उमसे कहूँगी ।

राजा का नाम बता दा फिर नहीं छेऊँगा ।

प्रामिज ?

प्रामिज ।

वह भीशा अभी दरज म कही रखा है जिम तुम हाथ मे थमा  
भाग गई थी । तुम्हारे पीछे भागता, मैं मारी शराब पी जाता, जिसे  
तुम इस निदयता से लापरवाही से जय-तव छनवाया करती थी ।  
पर नहीं मैं खडा उस तुम्हारे राजा को देखता रह गया पानो पर  
भुवा नासिसस । तब मैं कहा पहुँच गया था ।

आज तुमन, गुलाबी रंग पहना हागा, रानी । गुनाव का पगुडी-मा  
गलावी । आज दस नारीय है । बाला म फूल सजाये हागे हाथा म  
फूला के कगन गल मे फला की माला आज तुम महक गई हागा रात

रानी की भाति । मैं क्या वह रूप जानता नहा ? कितनी बार पलका पर गुलाबों में डुबोकर तुम्हें उतारा है, तुम्हारी किनयोपटा नाक की नाक तक भीना घूँघट झुकाया है, माथे पर भूमर लटकाया है, हाथों की हथेली में महती रचायी है, तुम्हें दुःख देना बनाया है, पर क्या तुम मुस्कराया भी रानी ? क्या तुम शर्माया भी ? ठीक वैसे जस मैं साक्षात् करता था ? क्या तुमने लज्जा कर किसी गुरदर कंधे में मुँह छुपाया, राजा कहा ?

सुधा तू बड़ी पगला है । कैसे तूने चाहा व चाजें बिवाह में उपहार देने का ? नहीं, वह पासल तुझे न मिल, उसे किसी कस्टम वान की कृपा लाल जाए । रानी को वह मन देना । उसके नये जीवन में उसे भूल जान दे, सुधा । वह सुखी रह यही एक कामना उस द । उसे दुखाया ही तो हमने दिया क्या ?

अपने यहाँ एम०ए० फ्रंट कनास के लिए नीकरी नहीं । डेरा एम०ए० फिरने हैं, जिनके चाचा-भामा बड़े लोग हैं । फिर तीन-तीन लड़कियाँ के व्याह स बीगया बटे के गव से गवित मेरा पिता, जानिगत कटन्तरता में जकडा तुम्हारा मा, ब्राह्मण और बनिय जाशी और अप्रवाल परिवार कम एक सूत्र में बध सकेंगे । तुम जानती थी, मैं भा । मैं, जो उपन्यासा पर पला था, तुम फिल्मी गाता में रची थी, भावुकता से बनी थी ।

दखो मेरा अप्वाइन्टमेंट आ गया है, अमरीका स ।

‘हाँ भया अब मम लेकर आयेंगे बड़ा मजा रहगा ।’

सुनकर जो बालन तुम्हारे मुँह पर भुक् घाय थे वे क्या हटे राना ? नहीं वे नहीं हट । किसी सस्ते उपयाम के नायक की तरह मैंने भा तुम्हारा घामू भागा हमान उठाकर रख रखा है । घामू सूत गय हैं और हर दाग काल हट गय हैं । उस हमान से घाय और नाक तुमने साव साव पाछा था । हमाल ? सबडा हमाला सा वह एक हमाल । और घर घर घन्त वाला मरा यह घिसी पिटा आत्मकहानी ?



पगल म हम गूब विद्वान है साथ को जानत है । हम भीति  
 याने नहा है मूसम पर नजर रगत है । नायतामा का दुगात है इर  
 मे बनरान है । हम बस्वद है सत्तिया को हमारी परम्परा है । ह  
 बहुत गुज है बहुत मच्छ भी है । मन्दिर का पुजारी दूसर मन्दिर  
 पुजारी म छिपता है छूकर नहीं चलता ता क्या हम बहुत निष्ठ  
 याल है ।

हमार यहाँ लडके सक्कर नहीं सुनत लडकिया क जाने घ्याउज  
 की बमर क बीच उल्ट लडकेन 'साज्ज का मम्बर पटन हैं । कामड  
 हुमा ता माध स अधिक परिवम बुण्डाप्रस्त रहन लगा है । हम अभी  
 बुण्डारहित है स्वरूप है । सक्क को हमन बन्नी रता है उस हाथी  
 नहीं होन निया है । शरीर हमारा पक है केवल आरमा परज और  
 प्रम की गंध स हम नाक सिंकाडने हैं, उस कीचड का मानन है कमल  
 का नहीं । हम पक्करी म डन फुटबास है जो लडकी वाला क हो जाने  
 है या लडके वाला के । नहीं है तो हम इन्मान नहीं हैं ।

अगर रात क दा नहीं बज रह हाल ता तुम्ह पान करता लूडी ।  
 तुम्ह बुलाता और फिर साथ साथ हम वही जाने । बस लम और मैं  
 अपना बार म । तुम्हारे यहा शरीर पक नहीं है न, दलदल नहीं है  
 वह सुपर हाई व है जहाँ स जो भी होकर गुजर जाए निशान नहीं  
 रहता, गति बना रहती है, बिगडता कुछ भा नहीं । तुम्हारा व नीनी  
 हरी आँसे जानती हो क्या कहता है ? व मुझ शरार द दती है लूचा ।  
 लगता है हाड माम रक्त का बना हूँ । दतना ऊचा हूँ, इतना लोडा हूँ  
 गगना है मेरे दो हाठ हैं, दो छात्र हैं, हाथ पर हैं । लगता है इन्मान  
 हूँ किसी का देवता नहीं शरीर म सरसराहट भी हाणी है और उस  
 सरसराहट म वह दद नहीं है जा गहर-गहरे वधा करता था । वह  
 छटपटाहट नहीं है, जो टीसता था, चुभती थी, हलाती था, माथा फोड  
 फोड लेने का विकल बगना थी । इस सरसराहट म उबलत पाना क  
 बुनतुता मा हल्का शाज है नाप को नमा है थार कुछ भी नहा । यह

केवल रक्त है जो रक्त को टरता है, जूड़ी यह निष्प्राण भी है ।

तुम देह हो, जूड़ी, जाननी हो बहद बला की देह । और शुभ्र है कि तुम्हारे बस का उभार सबके देखने को है तुम चलती हो तो खुली टांगा को लोच देकर । गुक्र है जूनी, तुम्हारी स्वस्थ सुदर वह किसी किमवनी सलवट भरी सब छुपा-रक लेने वाली साडी मे नही निपटी है । तुम्हारी देह नही और प्राण कही रहने हैं । दो को तुमने दो नही जाना है, एक पाया और एक ही समभा है बरता है । तुम अवश नही विवश नही, और यह क्या कम है जूड़ी, यह क्या कम है कि तुम अपने मन की हो, केवल अपने मन की ।



हम मोहरे दिन रात के



हम मोहरे दिन रात के



उमकी बेतना नीटी तो वह सूनी आँख से कमरे की सफ़्त दावारें देखनी रही । याद के फलक पर कोई भी चित्र उतर नहीं रहा था । सूनी आखा-सी सूनी दीवारें और दीवारा सा ही मूना उसका म्मति पटल । फिर एकाएक विजनी-मी चमकती बदना की एक तस्वीर उमके आग शगर म कराह गई । अपने हाथ से उसने इस तरह आँखें बन्द कर ली ज्या राशनी रोक दन से उसकी बसक भा रुक जाएगी । कुछ देर वह उसी मुद्रा म साँस राके पडी रही पर हारती हुई सा । म्मति-पटल पर पूरा घारात की तरह पिछले तीन म्हान का उसके भीतर चनता मानसिक द्बद्व एक साथ सचालित हा गया । बडी हारा भी यकन भरी सास छोड उसन आँख पर से हाथ उठा माथ से उलन बाल पाछ सरकाए और दरवाज पर पडे मल स नाल पर्दे के पाछ हस्पताल की न्तिचर्या की आती आवाजा को मुनने का यत्न किया । पर कुछ क्षण म हा जूता की फट फट और मरीजा का आग गुल विलान हा गया । चाहत हुए भा उसे लगा वह कुछ सुन नहा सकता है । उस नगा वह एक बक्यूम म ह एक दम अकेली बाइ उसक साथ है तो निफ उमका न्ति गन चलता भीतर के विवारा का महायुद्ध ।

इस बीने सप्ताह कितनी बार उसन इस ग्लानि को बार बार जिया है जिसकी लज्जा मिटान वह इस हस्पताल म आइ और हर बार वित्तुपणा से भर गए अपने मन को उरन विमा क्लुप धा दन वाली शगा म, निमलकारी त्रिवरणी म डुवा देना चाहा । वह कुछ दर इ तजार-





उसकी चेतना लौंगे तो वह सूनी आँख से कमर की सफ़्त दीवारें  
 खता रही । याद के फनक पर कोई भी चित्र उतर नहीं रहा था ।  
 सूनी आँखा-सी सूनी दावारें और दीवारा सा ही मूना उसका स्मृति  
 टल । फिर एकाएक विजना-भी चमकती वेदना की एक तस्वार उसके  
 मार शरीर म बराह गइ । अपने हाथ से उसने इन तरह आँवें बन्द  
 कर ली ज्या रोघानी राव देने से उसकी बसक भी रक जाएगी । कुछ  
 देर बह उसी मुद्रा म सास रोके पडी रही, पर हारती हुई सा । स्मृति  
 पटल पर पूरा बारात का तरह पिछले तीन महीने का उसके भातर  
 चलता मानसिक द्रुद्ध एक साथ सचालित हो गया । बडी हारी मी  
 थकन भरी साम छोड उसन आँख पर से हाथ उठा माथे मे उलक बाल  
 पीछे सरबाए और दरवाजे पर पडे मल मे नील पदों के पाछ हस्पताल  
 की दिनचर्या की आनी आवाजा को सुनन का यत्न किया । पर कुछ  
 क्षण म हा जूता की फट फट और मरीजा का भार गुल बितान हा  
 गया । चाहने हुए भा उसे लगा वह कुछ सुन नहीं सकता है । उसे  
 लगा वह एक बकपूम म ह एक दम अकला काई उसक साथ है ता  
 मिफ उमका दिन रात चलता भीतर के विकारा का महायुद्ध ।

इम बीत मपनाह कितनी बार उसन इस ग्नाति को बार-बार जिपा  
 है, जिमकी लज्जा मिटान वह इम हस्पताल म आई आर हर बार  
 विनूपणा स भर गए अपने मन को उरन जिमा कल्पु घा न वानी  
 गगा म निमलकारी त्रिधरणी म डुबा देना चाहा । वह कुछ देर इतजा-

सा करता रहा कि भापन वह पुराना ग्लानि फिर सिर उठाकर उम कासगा या उम पर हमगा पर एगा कुछ भी नहा हुआ । कुछ विस्मय स भपन स दूर भागना भागता वह दूरी और भपन को नजदाक स दता और धार धार त.प्र हाता यन्ही हा बरुण रनाई स उसका बतजा ऐंगन सगा ।

वह और ग्नि का तरह उम ग्नि भी भापिस स भा भपन धर क ताना कमरा म उम रट तरह-तरह के पीषा को सींच रहा था । पीषा का दग-भान प्रतिग्नि बद् घट का काम था । वह हाया का मिटटा म सान एक ग्ठते से पिनाडग्गरन म नई मिटटी और ताद डाल उस मनान का यत्न कर रही था । बाहर बोलाहल सुन लिडकी म घाई तो कई "यक्ति एक व्यक्ति का उठाए उसके घर का भार चल भा रह थ । समझ म नही आया कि क्या हो रहा है । शक्ति मन स द्वार खाला तो रमन था । अचत ! वाहका न बनाया उसे नई दिल्ली के रलव स्टेशन पर गश भा गया था और उसने यहा पता उह दिया था । घटक के दीवान पर रमन को लिटा और उसकी अटची को बहा बीच म रलवर जब सब लोग चल गए तो उसे एकाएक कुछ भी सूझ नही रहा था । डाक्टर आया इ जकशन दकर बोला बीच-बीच म खबर करता रह ।

रात भर वह दावान क पास कुर्सी डाल बठी थी । बार-बार अधरे म डूबता रमन कभी कभा आस खोल उसकी और दल लता पर उसक दखने म पहचान नही थी । वह समय पर खुसार नापती दवाइ देती सोचती क्यों उसके दिल म कुछ भी हलचल नही है । और उसे स्वय पर गव होता कि जीवन म जो "यक्ति भपना हो पराया हो गया भव मृत्यु म उससे क्या लेना देना । फिर भी विधि के इस क्रूर सयोग पर बह विह्वल हो जाती, क्षणभर को दवदास उसकी स्मति म कौष जाता । पर उसन बसम खाई थी कि वह कभी भपने को कुछ भी महसूस करने नही गी । फिर वसी ही यनवत हो वह उसकी चतना लोटन का

घाट दगती रही। बड़े-बड़े वह वही सो भी गई। जब आल खुली तो वह उमकी आर देख रहा था चुपचाप।

‘अब तबीयत कसी है?’ कुछ कहने के सबब से कहा उमन।  
‘लगता है बहुत देर साया।’

‘मह एकाएक हुआ कस?’

‘काम से आ रहा था, अम्बाल से ही तबीयत खबरान लगी, स्टेशन पर उतरा तो खडा नहीं हुआ गया एक यही पता याद।’

डाक्टर आया, देख गया। बोना, दो-तीन दिन अभी बड़े रस्ट की जरूरत है कही भी आना जाना नहीं। मुनकर बोना गुमसुम हा गए थ। कहा बोली थी ‘आपके यहां तार भेज दूँ क्या या टेलीफोन?’

‘नहीं, उसकी जरूरत नहीं है। कुछ देर तोना फिर चुप रह, एक दूसरे के कुछ कहने का प्रतीक्षा-सी म। तुम्ह परशाना हागी, आफिम भा ता जाना हागी।’

छुट्टी न ली है, उमन वात काटी।

करणा।

‘चाय का पानी मारा जल जाएगा’ वह वह वहा से चना गई और वह रसाई की खटपट म व्यस्तता दूँती रही। कितन वर्षों बाद यह मनुहा’ मनुहार से अधिक क्षमा प्रायना क्या! वह खीज उठा थी अपन पर, अपना स्थिति पर। फिर कुछ आश्वस्त हा वापस कमर म आ गई थी। आश्वस्त कि जिस मधुवाला एम० ए० के लिए एक दिन जा धम और समाज की दृष्टि से उमका था, पराया हा गया वह मधुवाला अभी भी ५७ सी मील के पासन पर अपनी घराहर के प्रति निश्चित प्रतीक्षा म हागी।

दिन छोटी-माटा उबेडबुन विस्तर के बपटे बदलन शव का पाना गम करन म दानो के बीच स हो तिरोहित हो गया। शांति का वनी लिडका के पीछे छिपन मूय को विदाकर चितकबरा चिडियो का समूह भी आगन म जब चना गया ता उसे बठ ही जाना पडा।

११८ \* हम माहर दिन रात क

की बात छेड़ेगा वह जानता था। और रचना का बात उठाना उस जरा भा नहीं रचता। उसका न चाहने भी जी ऐंठ जाया करता है।

रचना: अभा बनस्थनी म ही रहेगी क्या ?

क्या ? वह कडवी हुई।

‘यूँ ही। तुम्हें अवेता नहीं लगता ? शब्द लौटाए नहीं जान।

स्वयं उनको कचोट में रमन न आख बाद कर ला थी। वह बठी रहा। रात गए उठी ता वह साया नहीं था। बाला “करणा म सुबह की गाडी से लौट ज ऊँगा।

डॉक्टर न कहा है दो दिन।

डॉक्टर ता मू हा कहा करते हैं।

रहन का हुइ हाँ वह इतजार भी ता क तो हागा। प कहा नहीं।

ता घटे पाछे दवा दन आई ता वह साया नहीं था, तकिए क सहाय चला ही था। दवा रहन दा।

अर ! वह न-ना कछे। वह उसका आर दय रहा था एक तारा नजर से जाना पहचाना नजर से। उस नजर की चुभन उसक शरार न ग्यारह बरस नेला था और छ बप क अतरात क उपरात ना गमना शर। इम नजर के मतलब का पहचानता था। एक घटयता गुम्मा जाक भीतर दौडन लगा। वह कहा बुन मा खडी रही। वह उसका आर दन चन जा रहा था तीखी नजर से जिमकी चुभन उमक कपो से प-वग हा गए हृदय और विधया हा गए शरीर का छेपता चन जा रहा था। गुम्मा सक् बाला, “दवाइ ल लाजिए, दर हो रहा है। दवाइ का शीशा और चम्मच पकड उमक हाथ पर रमन न हाथ टक दिया था। रुधा-ना बोला, ‘करणा। वह टिख कर स्वाद मज पर रग कमर से जान का उछल हुइ। मज से चम्मच भनभनाता-ना पन दर था गिरा था। मुडा ता वह उसका आर दा बदम बड चुका था गय पमार।

गर्मी के किसी उमस भरे दिन ज्या वादन एकाएक वही स आकर र वग से वरम जाता है, व जितना तजा से पास आए उसी तजी रीत गए, पर गर्मी के वादन स ही दुबारा धिर बुद्ध दर नगानार रसन का ।

उमक जाने के कद सप्ताह पश्चात जब उसके शरीर स रमन के वर न उप्पा शरार का स्पश मिट चुका और केवल स्पश का याद ह गद वह घटा अपन का सालना रहा थी । वह इतना कच्चा कस ा गर्ष था । रमन उसे किसी और के लिए छाड गया इस बात का सुस्मा न भी मही पर उमक आत्मगम्मान का क्या हुआ । आखिर यह ा हुआ वह क्या मान दबा शारारिक भूख थी, या कि निश्चित पराजय के सामन क्षण भर का विजय के लिए यह उमके नारी मन का इतकाम ा ? और रमन क मन म क्या था ? क्षमा प्राथना-भी उसकी नम प्रांगे और क्षमा प्राथना सा उमका यह आचरण, जा शब्दा स कहना प्रसम्भव था, उसे क्या वह अगो स कह गया है । क्षमा, क्षमा क्षमा । या मृत्यु के निकट आतकित हा वह जीवन म जीवन खाज रहा था । या काइ नाच वक्ति उसे उद्यन किए थी जानन भर का कि इतन वर्षों वात भा उसका करुणा के अतरंग पर वहा राज्य है कि नहा ।

बुद्ध और सप्ताह टलने तक ता समभन को कुछ रहा ही नहा रह गर् लजा भय और एक भयानक राप अपन पर । उस लगता धरता फट जाए और वह उसमे समा जाए या कुछ खा कर सा जाए । पर डाक्टर उमकी मित्र थी ।

चादर क नाचे हाथ स उमन अपना शरीर बहुत टटाला । उस अपना शरीर बहुत खोखला और बाँभ-सा महमूस हुआ और मना हुआ । एकाएक मात्र क पख-मा फटफट कर विशाभ उसक भातर आदानित हा गया । उस क्या हन था जीवन के विनाश का ? और यदि वह अपना हार का अस्वाकार कर दती ६ वष तक स्पदन का घोणता नही तो उम हस्पतान आना ही क्या पडता । जीवन ज

१२० ❀ हम बाहर दिन रात के

जावन क निमाण म, त्ति रात की शत्रुज पर इंसान का निमम मात  
पैता ग्हा है जावन जिसम नवेद्य सा जल कर ही हम नीमित रठ सके  
है, कुट्ट साबलें चटा दन मान से रक ती नही गया । बिकार बन कर  
सही पर पनया ती । यपना बंटी का जन समाज की बुरी नजर स  
बचान क लिए जो दश निजाता उसने दिया है उनका भी ता जान  
बया बलना उमसे जीवन ले । उसे लगा उसवे स्तन बचोटने नो =  
और उसना शरीर प्रसव पीडा कवन का बचन हो उठा है ।

